# समस्या से
# छुटकारा


लेखक

रेव्हरैंड डॉ. अमर दीप सिंह
D.D., Ph.D.

डायरेक्टर, इन्टरनैशनल थियॉलॉजिकल ओपन युनिवर्सिटी



प्रकाशक

इन्टरनैशनल थियॉलॉजिकल ओपन युनिवर्सिटी

गली न. 3, चर्च रोड, गुरुनानक बस्ती, श्रीगंगानगर, राजस्थान

# *DELIVERENCE*

**FROM PROBLEMS**
(HINDI)

Writer
**The Rev. Dr. Amar deep Singh**
D.D., Ph.D.
Director, International Theological Open University

First Edition - 2016 Copies 2000

Publisher
**International Theological Open University**
**Street No.3, Church Road, Gurunanak Basti,**
**Sriganganagar, Rajasthan - 335001**

Printed by : Bhatia Printers, Sri Ganganagar Price Rs.80

## विषय अनुक्रमणिका

**प्रस्तावना**

**1. समस्या में सही चुनाव करें** 7–12

**2. समस्या में परमेश्वर के भजन गाकर आराधना करें** 13–18

**3. समस्या में अपने मुँह का अंगीकार सही रखें** 19–24

**4. छुटकारे का कार्य शुरु हो चुका है** 25–30

**5. विश्वास में बने रहें** 31–37

**6. प्रभु की आवाज सुनें** 38–44

**7. सामना करने के लिए खड़े रहें** 45–46

**8. परमेश्वर के दास को अपने घर बुलाएं** 47–52

**9. समस्या के समय मन्नत मानें** 53–54

**10. समस्या के समय उपवास रखें** 55–61

**11. आखिर तक विश्वास योग्य बने रहें** 62–68

**12. अपनी सारी चिन्ता प्रभु पर डाल दें** 69–70

# प्रस्तावना

**''जैसे मछलियां दुखदाई जाल में और चिड़ियां फन्दे में फँसती है, वैसे ही मनुष्य दुखदाई समय में जो उन पर अचानक आ पड़ता है, फँस जाते है।'' (सभो.9:12)**

**''यह जो बड़ी भीड़ (बड़ी समस्या) हम पर चढ़ाई कर रही है उसके सामने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें कुछ सूझता नहीं कि क्या करना चाहिए।''(2 इति.20:12)**

पवित्र बाइबल के इन वचनों में हम पाते हैं कि मनुष्य पर समस्या अचानक आ जाती है। जैसे मछली या चिड़िया प्रतिदिन की तरह खुशी से घूम रही होती, नाच रही होती है, बच्चों –परिवार के साथ आनन्द कर रही होती है, प्रतिदिन के कार्य कर रही होती हैं, तब अचानक दुखदाई जाल/ फंदे में फंस जाती हैं। ऐसे ही मनुष्य भी प्रतिदिन की तरह अपने जीवन मार्ग पर चल रहा होता है कि अचानक..... दुख..... संकट..... समस्या..... परेशानी..... विपत्ति..... मुसीबत में फंस जाता है।

और भी दुख की बात यह है कि समस्या के सामने हमारा बस नहीं चलता और न ही हमें कुछ सूझता है कि हम क्या करें और क्या न करें?

इस पुस्तक में परमेश्वर की पवित्र आत्मा के द्वारा हम समझेंगे कि पवित्र बाइबल के अनुसार हम बड़ी से बड़ी समस्या / संकट से कैसे बाहर निकल सकते हैं? इसको पढ़ने के पश्चात् आप उछलेंगे–नाचेंगे और कहेंगे

**''हे बड़े पहाड़ (बड़ी समस्या) तू क्या है? जरुब्बाबेल (परमेश्वर के लोगों) के सामने तू मैदान हो जाएगा।''(जकर्याह4:7)**

जी हां, सच में समस्या आपके पाँव के नीचे होगी। आप के जीवन में, आपके परिवार में व आपके कार्य में परमेश्वर के अनुग्रह से शांति व खुशहाली होगी। आप ने जैसे मेरी पहली पुस्तक **''विश्वास और आश्चर्यकर्म''** से आशीष पाई थी, इस पुस्तक से भी बहुत आशीष पाएंगे।

आपका अपना, प्रभु जी का दास

अमर दीप

# समस्या में सही चुनाव करें

जब अचानक दुख/ समस्या/ परेशानी/ मुश्किल/ विपत्ति आ जाती है तब सही चुनाव करें। चुनाव आपके हाथ में है।

''**मुश्किल में प्रार्थना कर सकते हो या बुड़बुड़ा सकते हो।** ''
''**मुश्किल में प्रभु जी की ओर आंखे लगा सकते हो या मुश्किल की ओर।**''
''**विश्वास प्रगट कर सकते हो या अविश्वास प्रगट कर सकते हो।**''
''**परमेश्वर की प्रतिज्ञा बोल बोल कर दोहराते रह सकते हो या संकट कितना बड़ा है बोल बोल कर दोहराते रह सकते हो।**''

हमें परेशानी के समय सही चुनाव करना चाहिए। मगर यही तो सब से बड़ी कठिनाई है । संकट में हमें सूझता ही नहीं कि हम क्या करें या क्या न करें। समस्या से बाहर निकलने के लिए कोई भी रास्ता नजर नहीं आता दुख मुश्किल पर जब हमारा बस नहीं चलता तब हमारा एक ही बात पर बस चलता है वो बात है, ''परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाना''

जब कहीं और हमारा जोर नहीं चलता, तब परमेश्वर पर हमारा जोर चलता है, और फिर हम शुरु हो जाते हैं .....परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाना। जिस समय हमें सब से ज्यादा परमेश्वर की जरुरत होती है, जिस समय हमें परमेश्वर पर सम्पूर्ण भरोसा करना होता है, जिस समय हमें परमेश्वर से संगति बनाकर रखनी होती है, जिस समय हमें परमेश्वर के अधीन होना होता है, जिस समय हमें परमेश्वर के चरणों में बैठ कर उसकी आवाज सुनना होता है, ठीक उसी समय हम अपना चुनाव गलत करते हैं और परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाना–कुड़कुड़ाना शुरु कर देते हैं। यही हमारी सब से बड़ी गलती होती है।

परमेश्वर को सब से अधिक बुरी बात यही लगती है कि जब उसके अपने लोग संकट में, उसके विरुद्ध कुड़कुड़ाते हैं।

जब परमेश्वर यहोवा के अपने ही लोग, संकट में परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाते हैं, तब परमेश्वर को यही सब से अधिक बुरी बात लगती है

प्रभु परमेश्वर चाहते हैं कि उसके लोग, हर समय, बड़ी से बड़ी मुश्किल– समस्या में उस पर सम्पूर्ण मन से भरोसा रखें। चुनाव हमें करना होता है। मुश्किल में, समस्या में, संकट में चाहे हालात हमारे बस में न हो, मगर चुनाव करना हमारे बस में होता है।

हम संकट में विश्वास करना चुन सकते हैं या परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाना। हम संकट में प्रभु की ओर देख कर विश्वास कर सकते हैं या संकट की ओर देख कर अविश्वास प्रगट कर सकते हैं। हम संकट को बार–बार बोल कर दोहराते रह सकते हैं या परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को बार–बार दोहरा सकते हैं। पवित्र बाइबल निगर्मन 14:11–12 में लिखा है कि जब परमेश्वर इस्त्राएलियों को मिस्त्र की गुलामी से निकाल कर कनान देश (उत्तम देश) में ले जा रहा था, तब रास्ते में लाल समुद्र आ गया। अब मूसा व अन्य सभी इस्त्राएली बीच में फँस गए थे। आगे लाल समुद्र था और पीछे मिस्त्र के राजा फिरौन की सेना। तब सच में ही एक बहुत बड़ा संकट/ मुश्किल/ समस्या उन लोगों के सामने आ गई थी।

इस बड़ी समस्या के कारण मूसा, यहोशू, कालिब व कुछ अन्य लोगों को छोड़ कर बाकी सभी इस्त्राएलियों ने ''समस्या में गलत चुनाव'' किया। अन्य सभी लोग परमेश्वर के खिलाफ कुड़कुड़ाने लगे, बुड़बुड़ाने लगे। यही गलती परमेश्वर को पसंद नहीं है। इससे परमेश्वर अप्रसन्न हो जाते हैं।

इस्त्राएलियों के दर्द, पीड़ा पर चित्त लगाकर ही तो परमेश्वर उनके बीच ऊतर आया था। (निर्गमन 3:7–8) परमेश्वर यहोवा उनकी पीड़ा को आनन्द में बदलना चाहते थे, परमेश्वर उनकी गरीबी को अमीरी में बदलना चाहते थे, परमेश्वर उनको भुखमरी जिन्दगी से निकाल कर आशीष देना चाहते थे। इसलिए ही तो परमेश्वर ने उनकी दोहाई सुनी व उनको छुड़ाने का निर्णय लिया। इस पूरी योजना को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने मूसा जी को चुना। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा बहुत बड़ी बड़ी 10 विपत्तियां मिस्त्र



देश पर डाली। आखिरकार राजा फिरौन ने गुलाम इस्त्राएलियों को आजाद कर दिया।

इस प्रकार सभी इस्त्राएली मूसा नबी की अगुवाई में (जो लाखों की गिनती में थे) मिस्त्र की गुलामी से बाहर निकल कर कनान देश की ओर खुशी–खुशी चल पड़े। सब लोग बहुत खुश थे, मगर अचानक उनके सामने बहुत बड़ी मुश्किल आ गई। उनके सामने लाल समुद्र था, जिसको पार करना असंभव था। उनके पीछे मिस्त्रियों की सेना उनको पकड़ने, मारने के लिए आ रही थी और अगर इस्त्राएली आगे बढ़ते तो सभी लाल समुद्र में डूब जाते।

अब इतनी बड़ी समस्या देख कर लोगों का मन कच्चा हो गया। अब फैसले की वह घड़ी आ पहुंची थी, जब उन्होंने चुनाव करना था कि वे इस मुश्किल में परमेश्वर पर विश्वास करें या परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाएं, अपनी आंखे प्रभु परमेश्वर की ओर लगाएं, या अपनी आखें संकट की ओर लगाएं, परमेश्वर की प्रतिज्ञा बोल बोल कर दोहराएं या संकट कितना बड़ा है, यह बोल बोल कर दोहराएं।

आखिर मूसा, यहोशू व कालिब ने सही चुनाव किया, लेकिन लाखों इस्त्राएलियों ने गलत चुनाव किया। परमेश्वर यहोवा ने अपने नाम की महिमा के लिए, अपने दास मूसा द्वारा अद्‌भुत चमत्कार किया और लाल समुद्र का पानी दो भाग हो गया। सभी इस्त्राएली लाल समुद्र पार कर गये। जब दुश्मन की सेना उनके पीछे लाल समुद्र के बीच पंहुची तब परमेश्वर की आज्ञा से पानी समुद्र में पहले की तरह बहने लगा और दुश्मन की पूरी सेना समुद्र में डूब कर नष्ट हो गई। (निर्गमन14:10–30)

परमेश्वर के लोगो, परमेश्वर के दास मूसा, लीडर यहोशू, लीडर कालिब व कुछ अन्य ने जब सही चुनाव किया, तब परमेश्वर ने इतनी बड़ी समस्या को चीर कर दो भाग कर दिया, समुद्र में रास्ता बना दिया अगर यह अगुए सही चुनाव नहीं करते तब क्या होता? उनके आगे भी मौत थी व पीछे भी मौत थी।

प्रिय लोगो, आप मुश्किल में सही चुनाव करें। जैसे मूसा ने संकट के दिन यहोवा को पुकारा, आप भी पुकारें। परमेश्वर आपको दुख, संकट, परेशानी, निराशा, असफलता, हानि से बाहर निकालेंगे।

''संकट के दिन मुझे पुकार, मैं तुझे छुड़ाऊँगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।'' (भजन 50:15)

''अपने मार्ग की चिंता यहोवा पर छोड़ और उस पर भरोसा रख (कुड़कुड़ा मत, मन में अविश्वास न आने दे), वही सब कुछ (जो तेरे लाभ के लिए है) पूरा करेगा।''(भजन 37:5)

''मत डर (इस बड़े संकट से) क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर ऊधर मत ताक (दूसरे लोगों से सहायता पाने के लिए) क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ। ..... मैं तेरी (इस मुश्किल, समस्या, चिंता, बीमारी, निराशा, असफलता, दुश्मनों के हमले, संकट आदि से) सहायता करुंगा।''

हम गिनती 13व 14 अध्याए में पढ़ते हैं कि मूसा ने यहोशू, कालिब सहित कुल बारह लोगों को कनान देश का भेद लेने के लिए भेजा। यह बारह लोग 40 दिन के बाद कनान देश का भेद लेकर वापस मूसा व पूरी मण्डली के पास आ गए। इन लोगो में से 10 लोगों ने कहा, ''उन (कनान के) लोगों पर चढ़ाई करने की शक्ति हम में नहीं है, क्योंकि वे (कनानी) हम से बलवान हैं। वे सब बड़े डील–डौल के हैं।..... हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे।'' (गिनती 13:31–33)। मगर उन 12 लोगों में से दो लोगों यहोशू और कालिब ने कहा, ''हम अभी चढ़ कर कनान देश को अपना कर लें, क्योंकि निःसन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है।'' (गिनती 13:30)

''तब सारी इस्त्राएली मण्डली चिल्ला उठी, और रात भर वे लोग (जिन्होंने गलत चुनाव किया, अविश्वास प्रगट किया, प्रतिज्ञा बोलकर दोहराने वाले नहीं, मुश्किल को बार बार बोलकर दोहराने वाले, प्रभु की ओर देखने वाले नहीं, मुश्किल की ओर देखने वाले, अविश्वास प्रगट कर बुड़बुड़ाने



वाले) रोते ही रहे। ..... बुड़बुड़ाते रहे।'' (गिनती 14:1–2)

यह लोग सारी रात जागते रहे, सारी रात रोते भी रहे, और कुड़कुड़ाते रहे। उनका चुनाव गलत था। चाहिये तो था कि वे लोग सारी रात जागते रहते, हन्ना व हिजकिय्याह की तरह रोते रहते और परमेश्वर से सहायता मांगते रहते। मगर बुड़बुड़ाना सही चुनाव नही था

तब परमेश्वर का क्रोध उन लोगों पर भड़का, जिन्होने संकट में गलत चुनाव किया। फिर यहोवा ने मूसा और हारुन से कहा, ''यह बुरी (इस्राएली) मण्डली मुझ पर बुड़बुड़ाती (संकट में सही चुनाव नहीं करती) रहती है,..... इनका बुड़बुड़ाना मैंने सुना है। इस लिए ..... (जैसे उन्होंने संकट में चुनाव किया)..... निःसन्देह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार करुँगा।'' (गिनती 14:26–28)

''तुम्हारे शव इसी जंगल में पड़े रहेंगे, (जिन्होंने सही चुनाव नहीं किया, वे लोग उन पर आने वाली समस्या, संकट, परेशानी, बीमारी, असफलता में ही पड़े रहेंगे।) (क्योंकि यह) मुझ पर बुड़बुड़ाते थे'' (गिनती 14:29)

मगर जिन्होंने सही चुनाव किया यहोशू व कालिब, वे ही विजय प्राप्त करेंगे और दुश्मन उनके पाँव के नीचे होगा और यही कनान देश के अधिकारी होंगे। (गिनती 14:30)

परमेश्वर के लोगो, यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है। आपको संकट में सही चुनाव करना चाहिए। आपको परमेश्वर पर सम्पूर्ण मन से भरोसा रखना चाहिए। आपको कभी भी, कभी भी, कभी भी, कभी भी, कभी भी, कभी भी बुड़बुड़ाना नहीं चाहिए। बल्कि पूरा भरोसा रखना चाहिए क्योकि, ''मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है। यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा।'' (भजन संहिता 121:2–7)

भजन संहिता 33:22 में लिखा है, ''हे यहोवा , जैसी तुझ पर हमारी आशा (चुनाव) है, वैसी ही तेरी करुणा भी हम पर हो।'' जी हां, प्रभु

जी के प्रिय लोगो, संकट में जैसा चुनाव हम करते हैं, वैसे ही परमेश्वर की करुणा हम पर होती है। जिस संकट के समय, हमें सब से ज्यादा परमेश्वर की जरुरत होती है, उसी समय हम गलत चुनाव करके, परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाना शुरु कर देते हैं।

अगर आप संकट में सही चुनाव करेंगे तो परमेश्वर आपकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा। इसके बाद..... न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी। (प्रकाशितवाक्य 21:4)



# समस्या में परमेश्वर के भजन गाकर आराधना करें

## समस्या से भी लाभ निकलेगा

जब अचानक समस्या आ जाती है तब भय (डर) और चिंता हमें एक दम दबा देते हैं। इसका प्रभाव हमारे शरीर पर भी होता है। हम शारीरिक तौर पर अपने आप को बहुत कमजोर थका–हारा हुआ महसूस करते हैं। पवित्र बाइबल के अनुसार अगर हम परमेश्वर के भजन गाकर उसकी आराधना करें तो परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह उसी समय हमारी समस्या से हमें छुटकारा देते हैं।

2 इतिहास 20 अध्याए में लिखा है कि मोआबियों अम्मोनियों और उनके साथ कई मूनियों ने युद्ध करने के लिए यहोशापात राजा पर बहुत बड़ी सेना के साथ चढ़ाई की। यहोशापात यहूदा का राजा था और यह परमेश्वर यहोवा के लोग थे। वह प्रतिदिन की तरह अपनी प्रजा व परिवार में आनन्दित था अचानक यहोशापात राजा को पता चला कि उस पर बहुत बड़ी सेना ने चढ़ाई कर दी है तब वह ड़र गया, भयभीत हो गया। उसके शरीर का सारा बल जाता रहा। वह व्याकुल हो गया, चिंता ने उसे घेर लिया।

उसके दिल–दिमाग में युद्ध के बाद के हालात सामने आने लगे। वह सोचने लगा कि युद्ध में मैं मारा जाऊंगा या बन्दी बना लिया जाऊंगा। अगर बन्दी भी बना लिया तो भी बाद में मुझे मार दिया जाएगा। मेरे सारे बेटे मौत के घाट ऊतार दिए जाएंगे। मेरे घर की सभी औरतों को बन्दी बना कर दुश्मन राजा अपने महलों में ले जाएंगे। हमारे देश की सारी फसल, पशु व धन सम्पत्ति लूट ली जाएगी। प्रजा के सभी तन्दरुस्त आदमी व औरतों को बन्दी बना कर अपने देश ले जाएंगे। हमारे गढ़ वाले नगर गिरा दिए जाएंगे व आग लगा दी जाएंगी। पानी के कुओं को पत्थरों से भर दिया जाएगा। (क्योंकि उस काल में दुश्मन राजा ऐसा ही किया करते थे)

राजा यहोशापात यह सब सोच कर बहुत ही घबरा गया। तब उसने उपवास का प्रचार करवाया व यहोवा परमेश्वर से सहायता मांगी। (2इतिहास 20:3–4) और परमेश्वर से प्रार्थना कर कहा, '' यह जो बड़ी भीड़ (सेना) हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके सामने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें कुछ सूझता नहीं कि क्या करना चाहिए ? परन्तु हमारी आंखे तेरी ओर लगी हैं। (20:12)

यहोशापात राजा ने अपनी सेना की गिनती व दुश्मन की सेना की गिनती की तुलना कर ली व अपने हथियार व दुश्मनों के हथियारों की तुलना करने के बाद कहता है कि हमारा इस बड़ी सेना पर बस नहीं चलता। क्योंकि इनकी सेना व हथियारों की गिनती हजारों में थी व दुश्मन की सेना व हथियार लाखों में थे। तब यहोशापात राजा चिल्ला उठा, ''उसके सामने हमारा तो बस नहीं चलता।''

तब इस बड़ी व अचानक आ जाने वाली समस्या पर विजय पाने के लिए जो परमेश्वर यहोवा ने उपाय बताया, उस पर मैं आपके साथ विचार करना चाहता हूं।

परमेश्वर ने यहोशापात राजा से कहा, '' कल उनका (दुश्मन का, समस्या का) सामना करने को जाना। इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा। खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना। मत डरो, तुम्हारा मन कच्चा न हो।''

परमेश्वर ने यहोशापात राजा से कहा कि कल ही दुश्मन का सामना करने जाना । दो–चार दिन रुककर सेना और हथियारों की तैयारी करने के बाद नहीं। और हथियारबन्दों के आगे चलने के लिए मेरी (परमेश्वर की) स्तुति के भजन गाने वाले नियुक्त करना (20:21)

यहोशापात राजा ने वैसा ही किया। हथियारबन्द सैनिकों के आगे–आगे स्तुति भजन गाने वाले यह भजन गा रहे थे।



**''यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है। ''**

जैसे ही परमेश्वर के लोग गाकर परमेश्वर की स्तुति करने लगे, उस समय परमेश्वर ने चमत्कार किया। दुश्मन आपस में ही एक दूसरे का नाश करने लगे और उनमें से एक भी नहीं बचा। 2 इतिहास 20:22 में लिखा है कि जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने .....।

जब यहूदियों (परमेश्वर के लोगों) ने जंगल की चौकी पर पहुंचकर उस भीड़ (सेना) की ओर दृष्टि की तब क्या देखा कि वे भूमि पर पड़े हुए शव हैं और कोई नहीं बचा। (20:24)जैसे यहां दुश्मनों का कोई नहीं बचा, पूर्ण छुटकारा मिला। वैसे ही परमेश्वर आपकी समस्या को पूरी तरह खत्म करेंगे। समस्या का थोड़ा सा भी अंश नहीं रहने देंगे।

वाह! अद्‌भुत, परमेश्वर के लोगों को युद्ध में लड़ना नहीं पड़ा, बस परमेश्वर की स्तुति के भजन गाएं और बड़ी समस्या (सेना) से छुटकारा मिल गया।

परमेश्वर के लोगो, आप भी स्तुति के भजन गाकर आराधना करें। आप की बड़ी से बड़ी समस्या को परमेश्वर यहोवा खत्म कर देंगे।

## समस्या से लाभ निकलना

2 इतिहास 20:25 से पता चलता है कि दुश्मनों की सेना कितनी बड़ी थी व परमेश्वर के लोगों की सेना कितनी कम थी। दुश्मनों के शवों के बीच बहुत से गहने, सम्पत्ति मिली। लूट (गहने आदि) इतनी ज्यादा थी कि यहोशापात राजा की पूरी सेना को बटोरने में तीन दिन लगे। आपको इसी बात से अंदाजा हो गया होगा कि दुश्मनों की सेना कितनी बड़ी थी।

परमेश्वर ने अपने लोगों को दुश्मनों से बचाया तो है ही, बल्कि उनकी धन–सम्पत्ति भी अपने लोगों को दिला दी।

प्रभु के लोगो, प्रभु परमेश्वर आपके विरुद्ध आने वाली समस्या से भी आपके लिए ''लाभ'' निकाल देंगे। आप बस एक काम करें। प्रभु परमेश्वर की स्तुति के गीत गाकर आराधना करें।

प्रेरितों के काम 16:16–34 में भी हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर के दास, प्रेरित पौलुस और सीलास पर अचानक एक समस्या, मुश्किल आ गई। वह बहुत खुश थे व प्रतिदिन की तरह प्रार्थना के स्थान को जा रहे थे कि रास्ते में उन्होंने एक भलाई का काम किया। इस भलाई के कार्य के कारण दोनों को बन्दीगृह में, भीतरी कोठरी में कैद कर दिया व उनके पांव काठ में ठोक दिए और जंजीरों से जकड़ दिया गया।

यह मुसीबत, मुश्किल, समस्या, परेशानी उन पर अचानक आ पड़ी। इन परमेश्वर के दासों ने भी राजा यहोशापात की तरह भजन गाकर परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह की आराधना की। मुझे लगता है कि उन्होंने राजा यहोशापात का इतिहास जरुर पढ़ा होगा। दोनों इस सिद्धांत को जानते थे। उन्हें पक्का मालूम था कि मुश्किल से बाहर कैसे निकलना है।

इस कारण ही दोनों प्रेरित, आधी रात को परमेश्वर के भजन गाकर स्तुति कर रहे थे। (प्रेरितों 16:25) जैसे ही वह गाकर स्तुति करने लगे, परमेश्वर ने अद्‌भुत कार्य किया। एकाएक बड़ा भूकम्प आया, तुरन्त सब द्वार खुल गए और सब के बन्धन खुल गए। प्रभु यीशु मसीह की ओर से छुटकारा, बचाव प्रगट हो गया। समस्या का समाधान हो गया।

अगर आज हमारे जैसे लोगों पर इस प्रकार की समस्या आ जाए तो हम यह सोचते हैं कि किस राजनीतिक नेता से छुटकारे के लिए सम्पर्क किया जाए अथवा कोई और बड़ी सिफारिश ढूंढते हैं। मगर हम परमेश्वर की स्तुति के भजन नहीं गाते। हां, परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाने के भजन जरुर गा लेते हैं।



प्रेरित पौलुस और सीलास कुड़कुड़ा नहीं रहे थे कि प्रभु आप ने यह क्या कर दिया। वह यह नहीं सोच रहे थे कि बाहर कैसे निकला जाए बल्कि स्तुति के भजन गा रहे थे। हम यह सोचते रहते हैं कि ''हम अपनी कोशिश से यह बन्द द्वार कैसे खोलें।'' ''हमने तो किसी का बुरा नहीं किया, फिर हमारे साथ ऐसा क्यों हो रहा है।'' जब हम कहते हैं ''हे प्रभु बचा, हम मर रहे हैं, तुझे हमारी चिंता नहीं?'' तब प्रभु बचा तो लेता है मगर जैसे चेलों से कहा था ''हे अल्पविश्वासी.... '' हमें भी कहते हैं।

प्रभु के लोगों याद रखें, आराधना में छुटकारा है। प्रभु आपको प्रत्येक मुश्किल से छुटकारा देंगे। बस आप उसकी स्तुति के भजन गाएं। आपके सारे बन्धन (पाप के, दुष्ट आत्मा के, बीमारी के, कर्ज के, श्राप के, लड़ाई–झगड़े के, अदालतों के, असफलता के, विफलता के, निराशा के) टूट जाएंगे व सब द्वार खुल जाएंगे।

## समस्या से लाभ निकलना

परमेश्वर के लोगो, प्रेरित पौलुस व प्रेरित सीलास कैद से तो छूट गए, साथ में उन्हें बहुत बड़ा लाभ भी प्राप्त हुआ। जो जेलर (दारोगा) थोड़ी देर पहले उनके ऊपर हुकम चला रहा था। बेंत मारने की आज्ञा दे रहा था। बुरा बोल रहा था। वही जेलर अब उनके पांव में गिरा हुआ है, हाथ जोड़ रहा है, क्षमा मांग रहा है और कहता है कि उद्धार पाने के लिए मैं क्या करुं?

तब प्रभु के दास ने कहा, ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।'' तब दारोगा ने अपने परिवार व अपने लोगों के साथ मिलकर उसी रात प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया व बपतिस्मा लेकर आनन्द मनाया व शांति पाई।

इस समस्या से लाभ यह मिला कि इतने बड़े पुलिस अधिकारी ने परिवार समेत बपतिस्मा लिया। वह सब ''मसीह'' बन गए। और मैं सोचता हूँ के उस जेलर के द्वारा और भी बहुत से लोगों ने प्रभु यीशु मसीह को उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया होगा।

आप जरा सोचे, अगर आपके जिले का पुलिस अधीक्षक (एस.पी.) बपतिस्मा लेकर चर्च आने लगे तो कितनी बड़ी आशीष की बात होगी।

प्रभु के लोगो, आप प्रभु की स्तुति के भजन गाते रहें। जब मुश्किल हो, समस्या हो तब ही नहीं, बल्कि खुशी के समय भी।

'' हे सारी पृथ्वी के लोगो, यहोवा का जय जयकार करो आनन्द से यहोवा की आराधना करो।''

(भजन संहिता 100:1–2)

''हे सारी पृथ्वी के लोगो, यहोवा का जय जयकार करो, उत्साहपूर्वक जय जयकार करो और भजन गाओ।''

(भजन संहिता 98:4)



# समस्या में अपने मुँह का अंगीकार सही रखें

## '' सब कुशल है ''

हमें अपने मुँह का अंगीकार सही रखना है। जब हमारा कुशल से, शांति से जीवन चल रहा है उस समय ही नहीं बल्कि दुख, संकट, परेशानी, मुश्किल व पीड़ा में भी अपने मुँह का अंगीकार सही रखें।

इब्रानियों 10:23 में लिखा है ''आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है'' हमारे मुँह से परमेश्वर की प्रतिज्ञा के आधार पर आशा का अंगीकार निकलना चाहिए। संकट में भी आपके मुँह से ''सब कुशल है'' ''सब कुशल होगा'' (सब कुछ ठीक है, सब कुछ ठीक होगा) निकलना चाहिए।

हम 2 राजा 4: 18–37 में पढ़ते हैं कि शूनेम नगर में एक कुलीन स्त्री रहती थी। उसके कोई संतान नहीं थी। बहुत वर्षो तक वह अपनी संतान की प्राप्ति के लिए तड़पती रही। मगर बुढ़ापे में परमेश्वर के दास एलीशा के वचन के अनुसार, परमेश्वर ने उन्हें एक बेटा दिया।

आप समझ सकते हैं कि बेटे की कितनी बड़ी खुशी उन्होंने मनाई होगी वह अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी क्योंकि वह उनका एकलौता बेटा था और बुढ़ापे में बहुत इन्तजार के बाद मिला था। बेटा बहुत ही लाडला था।

बेटा, माता व पिता बहुत खुश थे, आनन्दित थे, मगर एक दिन अचानक दुखों का पहाड़ उन पर टूट पड़ा। बेटे ने अपनी मां की गोद में दम तोड़ दिया। जिस समय बेटा मर गया, तब माँ का क्या हाल हुआ होगा, उस औरत का पति भी उसके पास नहीं था। खेत में काम कर रहा था।

मगर मैं आपको बताना चाहता हूं कि इतने बड़े दुख, संकट में भी इस स्त्री ने अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रखा। उसने अपने मरे हुए बेटे को कमरे के अंदर खाट पर लिटा दिया और बाहर से द्वार बन्द कर दिया (2राजा 4:21)

तब उसने अपने पति से पुकार कर कहा,''मेरे पास एक सेवक और एक गदही तुरन्त भेज दे कि मैं परमेश्वर के दास एलीशा के यहां झट पट हो आऊँ।'' तब उसका पति हैरान होकर पूछने लगा कि तू एक दम अचानक क्यों परमेश्वर के दास के पास जाना चाहती है?

आज कोई प्रार्थना का विशेष दिन तो है नहीं, और न ही आज विश्राम दिन है। तब उसकी स्त्री ने कहा,''कुशल होगा।'' उस स्त्री ने अपने पति के सामने न तो आंसू निकाले, न वह चिल्लाई। वह बता सकती थी कि उन पर कितनी बड़ी मुसीबत आ गई, मगर उस ने आशा का अंगीकार करते हुए कहा, ''कुशल होगा।''

वह स्त्री अपने रिश्तेदारों के बीच रहती थी। (2 राजा 4:13) मगर उसने किसी को अपना दुख नहीं बताया। जब वह परमेश्वर के दास एलीशा के पास पहुंचने ही वाली थी तो गेहजी ने उस से पूछा कि तू कुशल से है? तेरा पति कुशल से है? और तेरा लड़का कुशल से है? तब उस स्त्री ने जवाब दिया, ''हां कुशल से है।''

परमेश्वर के लोगो आप जानते हैं कि यह स्त्री एकलौते बेटे की लाश घर में छोड़ कर, बाहर से द्वार बन्द कर के आई है। फिर भी मुंह से आशा का अंगीकार ''सब कुशल से है'' बोल रही है।

दूसरी तरफ अगर हमारे ऊपर छोटी सी भी कोई मुश्किल आ जाए, हम रोने– चिल्लाने, बुड़बुड़ाने (कुड़कड़ाने) लग जाते हैं। कोई हम से हमारा हाल–चाल पूछे तो हम कहते हैं, '' बुरा हाल है'', ''बहुत दुखी हैं'', ''कुछ भी कुशल नहीं।''

अगर चार दिन बिजनेस में मंदी चल रही है तो हम कहते हैं, बहुत बुरा हाल है। थोड़ा सा बुखार हो गया, परिवार में किसी के हाथ पांव दर्द होने लग जाए, स्कूल में पढ़ाई में अंक कम आ जाए, बच्चों का रिश्ता पक्का होने ही वाला हो कि रिश्ता टूट जाए, घर में पैसे की थोड़ी सी तंगी आ जाए, दुश्मन हमारे ऊपर केस कर दे, आदि कोई भी छोटी सी भी मुश्किल आ



जाए तो हम चिल्लाते हैं। ''बहुत बुरा हाल है'' या '' कुछ भी कुशल नहीं।'' आशा का अंगीकार नहीं करते।

प्रभु परमेश्वर के लोगो, शूनेम नगर की रहने वाली इस कुलीन स्त्री से सीखें। उसका अंगीकार आशा का था। वह कह रही थी ''सब कुशल है।'' और तब उस स्त्री ने परमेश्वर के दास को जाकर पूरी बात बता दी।

जब परमेश्वर का दास एलीशा इस स्त्री के घर गया तब परमेश्वर ने अद्‌भुत चमत्कार किया और मरे हुए लड़के को जिंदा कर दिया। उस घर में ''सब कुशल है'' हो गया।

आप भी आशा के अंगीकार को थामे रहें। जब मैडिकल रिर्पोट खराब आए तब भी कहें, ''सब कुशल है।'' जब शादी रखी हो, और आपके पास पैसे नहीं, तब भी आप कहें, ''सब कुशल है।'' आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी नहीं, तब भी आप कहें ''सब कुशल है।''

आपकी पत्नी आप का कहना नहीं मानती तब भी आप कहें, ''सब ठीक है।'' तब परमेश्वर सब कुशल कर देगें। हां, प्रभु यीशु मसीह के चरणों में जाकर आप अपने मन की सारी बातें उण्डेल दें। प्रभु के आगे अपनी सारी परेशानियां रखें। प्रभु को सब बातें बताएं।

2राजा 6:8–23 में भी जब अरामी सेना के एक दल ने रथों और घोड़ों सहित उस नगर को घेर लिया जहां पर दास एलीशा रहता था। जब भोर को एलीशा का टहलुआ उठा और निकल कर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए पड़ा है। तब एलीशा के टहलुए ने एलीशा से कहा,'' हाय। मेरे स्वामी, हम क्या करें?'' एलीशा ने कहा,''मत डर'' क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उससे अधिक हैं, असल में एलीशा प्रभु का दास कह रहा था, '' सब कुशल है'', ''सब ठीक है।'' जो एलीशा ने कहा वो आशा का अंगीकार था। एलीशा को विश्वास था कि परमेश्वर उसके संग है और परमेश्वर हमेशां अपने लोगों की रक्षा करता है। इस विश्वास को प्रकट करने के लिए यह जरूरी था कि एलीशा आशा का अंगीकार करता।

जब उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा ''मत डर, मैं तेरे संग हूँ'' पर भरोसा किया तब आशा का अंगीकार करते हुए बोला, ''सब ठीक है।''

परमेश्वर के लोगो, परमेश्वर ने वहां अद्‌भुत चमत्कार दिखाया। उसी समय उन्होंने देखा उनके चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है। जब पूरी घटना पढ़ते हैं तो पाते हैं कि परमेश्वर ने वहां सब कुशल कर दिया।

इतनी बड़ी मुश्किल देखकर एलीशा अपने सेवक की तरह चिंता कर सकता था। घबरा सकता था, मुँह से गलत अंगीकार कर सकता था। सच में वह उस समय मुश्किल में थे, मगर उनके आशा के अंगीकार द्वारा परमेश्वर ने सब कुशल कर दिया।

परमेश्वर आपकी प्रत्येक परेशानी, दुख, पीड़ा, मुश्किल, विपत्ति, असफलता, विफलता व निराशा में आपकी मदद करेंगे। बस आप आशा के अंगीकार को पकड़े रहें ''सब ठीक है।'', ''सब कुशल है।''

**''मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है।'' (भजन 121:2)**

**''यहोवा सारी विपत्ति से मेरी रक्षा करेगा,व मेरे प्राण की रक्षा करेगा।'' (भजन 121:7)**

गिनती 13 अध्याए से पता चलता है कि जब इस्त्राएली कनान देश में प्रवेश करने वाले थे, तब मूसा ने 12 लोगों को कनान देश का भेद लेने को भेजा। यह सब इस्त्राएलियों के प्रधान थे। इन्होंने यहोवा परमेश्वर को बड़े–बड़े चमत्कार करते देखा था।



यह 12 प्रधान कनान देश के अंदर पंहुच कर, भेद लेकर वापस आए। इन 12 लोगों ने सब एक साथ देखा था। मगर इनमें से 10 लोगों ने सभी इस्त्राएलियों के सामने कहा कि बहुत बुरा हाल है, हम हार जाऐंगे, हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, .... कुछ भी कुशल नहीं है।

मगर उनमें से दूसरे 2 लोगों यहोशू और कालिब ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर भरोसा रखते हुए आशा का अंगीकार किया कि ''सब कुशल है।'' हम जीत जाएंगे।

परमेश्वर के लोगो, 12 लोगों के पास बराबर मौका था, सभी ने सब कुछ एक साथ देखा था। सभी के सामने एक जैसी समस्या, मुश्किल, परेशानी थी। मगर 10 लोग आशा के अंगीकार को दृढ़ता के साथ नहीं थामे रह सके। इसलिए यह 10 लोग और इनके पीछे लगने वाले लाखों लोग कनान देश में प्रवेश नहीं कर पाए।

दूसरी तरफ 2 लोग और उनके पीछे चलने वाले (आशा का अंगीकार करने वाले, सब कुशल है कहने वाले) लाखों लोग कनान देश (खुशी, आनन्द, भरपूर आशीष) में प्रवेश कर गए।

रोमियों 10:9–10 में लिखा है ''यदि तू अपने मुँह से प्रभु यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे.....तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है और उद्धार के लिए मुँह से अंगीकार किया जाता है।''

इस वचन में भी मुँह के अंगीकार का कितना बढ़ा महत्त्व है। उद्धार (मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा, अनन्त जीवन, बहुतायत का जीवन, शांति से भरा आनन्दित जीवन, आशीष वाला जीवन, पापों की क्षमा, परमेश्वर से मेल–मिलाप, परमेश्वर की लेपालक संतान बनना, नरक की आग से बचना) पाने के लिए मुँह से अंगीकार करना जरुरी है।

इस प्रकार इन सब आशीषों में बने रहने के लिए मुँह से आशा का अंगीकार करते रहना बहुत ही जरुरी है। मात्र मन से विश्वास करना ही काफी नहीं बल्कि मुँह से अंगीकार करना भी बहुत जरुरी है।

प्रकाशितवाक्य 12:11 में स्वर्गीय दर्शन मिलता है कि किस प्रकार अंत में परमेश्वर के लोग विजयी होंगे और शैतान नीचे फेंक दिया जाएगा। इस में विशेष बात यह है कि परमेश्वर के लोग प्रभु यीशु मसीह के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर (शैतान पर) जयवन्त हुए।

जी हां, प्रभु यीशु मसीह के पवित्र लहू के बिना तो कुछ हो ही नहीं सकता, मगर साथ में यह भी लिखा है कि अपने मुँह के वचन, यानि कि आशा के अंगीकार के द्वारा जयवन्त हुए। इसलिए आपको अपने आशा के अंगीकार की ओर ध्यान देना है। आप अपना अंगीकार सही रखें, परमेश्वर आपको संकट से बाहर निकाल देंगे।

**''मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहूंगा, और तेरी स्तुति अधिक अधिक करता जाऊंगा।'' (भजन संहिता 71:14)**



# छुटकारे का कार्य शुरु हो चुका है

## ''भारी आशीष आने वाली है''

जिस समय आपने अपनी मुश्किल, परेशानी, संकट, बोझ व बीमारी में, परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह को पुकारा, उसी समय प्रभु ने आपके छुटकारे के लिए कार्य शुरु कर दिया है।

हो सकता है आपको कुछ भी नजर नहीं आ रहा हो, मगर महान परमेश्वर की ओर से आपके छुटकारे का आदेश आ चुका है।

1राजा 17 व 18 अध्याय में लिखा है कि राजा अहाब, वो कार्य कर रहा था जो परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था। अहाब की पत्नी रानी ईज़ेबेल बहुत ही खतरनाक औरत थी। उसके जीवन में परमेश्वर का बिल्कुल भी भय नहीं था। इसने वही सब किया जिस से परमेश्वर को जलन होती थी। इस लिए ही वह परमेश्वर की ओर से श्रापित हुई और इस का अंत भंयकर हुआ।

उस समय साढे तीन वर्षो तक मेंह नहीं बरसा। पशु, जानवर सब मरने लगे, सब हरियाली सूख गई। आखिर में लोग मरने लगे। लोग चिल्ला उठे। कुछ लोग बच्चों को मारके, पका कर खाने लगे। अपनी बाहों (बाजूओं) का मांस खाने लगे, पशु तो पहले ही खा चुके थे।

परिवार के लोगों के सामने, अपने लोग प्यास व भूख से तड़पने लगे, मरने लगे। आकाश से एक बूंद भी पानी नहीं गिर रहा था। बहुत बड़ी मुश्किल, बहुत ही बड़ी समस्या में सब लोग घिर गए। इन लोगों के पास मरने के सिवा और कोई चारा नहीं था।

कोई अच्छी खबर सुनाई नहीं देती थी बस सुनाई देते थे, ''मौत के समाचार''। ''आज वह मर गया भूख से'', ''आज रात वह व्यक्ति (अपने लोगों का नाम लेकर) मर जाएगा'', ''पड़ोस के गांव में आज बीती रात में इतने लोग मर गए।''

राजा के दरबार में भी बस यही बातें होती कि भूख, प्यास से इतने लोग मर गए। सब ओर हाहाकार मची हुई थी।

तब परमेश्वर यहोवा ने उनकी इस भयंकर समस्या की ओर ध्यान लगाया और उन्हें इस परेशानी से बाहर निकालने के लिए फैसला किया। परमेश्वर ने अपने दास एलिय्याह से कहा कि राजा अहाब के पास जाकर बोल कि यहोवा परमेश्वर भूमि पर मेंह बरसा देगा। (1राजा 18:1)

तब एलिय्याह के कहने के अनुसार राजा अहाब ने सारे इस्राएलियों को बुला भेजा और कर्मेल पर्वत पर इकट्ठा किया। एलिय्याह ने सब लोगों को समझाया कि वह सब परमेश्वर यहोवा के पीछे चलें। पहले वह रानी ईज़ेबेल के दबाव व भरमाने पर बाल देवता के पीछे चलने लग गए थे।

एलिय्याह के कहने अनुसार, पहले बाल देवता के साढे चार सौ नबियों ने भोर से लेकर दोपहर तक बाल देवता की प्रार्थना की, कि भेंट ग्रहण हो और बरसात आ जाए। मगर कुछ नहीं हुआ।

आखिर एलिय्याह ने भेंट ग्रहण करने व मेंह बरसाने के लिए यहोवा से प्रार्थना की। तब यहोवा परमेश्वर की आग आकाश से प्रगट हुई और यहोवा ने भेंट को ग्रहण कर लिया। तब सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे,''यहोवा ही परमेश्वर है।'' (1राजा 18:38–39)

### *''कुछ नहीं दिखता'', मगर परमेश्वर ने अपना कार्य शुरू कर दिया*

अब वह विशेष बात जिस पर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ जो राजा 18:41–45 में लिखी है। परमेश्वर यहोवा ने एलिय्याह से कहा था कि जाकर अहाब राजा से बात कर और मैं यहोवा मेंह बरसा दूंगा। तब सारे घटनाक्रम के बाद एलिय्याह कर्मेल पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और सिर झुका कर यहोवा से प्रार्थना करने लगा। एलिय्याह ने अपने सेवक से कहा, ''चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि करके देख।''तब सेवक ने चढ़कर देखा और लौटकर कहा,''कुछ नहीं दिखता।''एलिय्याह ने उसे छः बार भेजा और सेवक का वही जवाब ''कुछ नहीं दिखता।''



मगर जब सातवीं बार फिर भेजा तब सेवक ने कहा, ''समुद्र में से मनुष्य के हाथ–सा एक छोटा बादल उठ रहा है।''

तब एलिय्याह ने अहाब राजा को संदेश दिया कि भारी वर्षा होने वाली है, इसलिए रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि वर्षा के कारण तू रास्ते में ही फस जाए।

## थोड़ी ही देर में .....भारी वर्षा होने लगी

(1राजा 18:45)

परमेश्वर के लोगो, आपके ऊपर थोडी ही देर में..... भारी आशीष की वर्षा होने वाली है। हो सकता है कि अभी आपको ''कुछ नहीं दिखता'' बार–बार देखने के बाद भी ''कुछ नहीं दिखता'', कोई बदलाव नहीं दिख रहा।

आपकी चिंता, परेशानी, बोझ, समस्या, बीमारी, घर के हालात व बिजनेस के हालात में कुछ बदलाव नहीं आ रहा, मगर मुझे भारी वर्षा (आशीष) की सनसनाहट सुनाई दे रही है। (1राजा 18:41)

सच में आप, अपने आप को तैयार कर लें क्योंकि थोड़ी देर बाद. .....भारी आशीष आने वाली है। हो सकता है, आपको भी कुछ भी न दिखाई दे रहा हो, मुश्किल वैसी ही बनी हुई है, मगर प्रभु के लोगो परमेश्वर ने आपको रोग, दुख, सकंट से बाहर निकाल कर, भारी आशीष देने का फैसला कर लिया है।

जी हां, थोड़ी सी नहीं, भारी आशीष। प्रभु यीशु मसीह आपके सब आंसू पोंछ डालेंगे। अब आपका रोना–चिल्लाना खत्म हो रहा है। आपके छुटकारे का कार्य शुरु हो चुका है।

जब सेवक ने एलिय्याह से आ कर कहा कि हाथ जितना छोटा सा बादल दिखाई दे रहा है, तब एलिय्याह समझ गया कि भारी वर्षा होने वाली है।

अगर आप बीमारी से  पीड़ित हैं, और प्रार्थना के बाद आपको थोड़ी सी भी चंगाई नजर आ रही है तो समझ जाएं कि चंगाई की भारी आशीष आने वाली है।

आप अपनी कमाई छेद वाली थैली में रख रहे हैं और आपका पैसा पूरा खर्च हो जाता है। इस कारण आप पर कर्ज हो गया है। आप कर्ज के कारण परेशान हैं और अब आप प्रभु यीशु मसीह के चरणो में आएं हैं। प्रार्थना के बाद आपके घर में सौ रुपया भी बचना शुरु हो गया है तो समझ जाएं कि धन–सम्पत्ति की भारी आशीष की वर्षा होने वाली है। प्रभु आपके बिजनेस को बहुत बढ़ाने वाला है। आपको सांसारिक आशीषों से प्रभु भरने वाला है, आपके छुटकारे का कार्य शुरु हो चुका है।

अगर आपके पति नशा करते हैं, झगड़ा करते हैं, घर में पैसा नहीं देते। इस कारण आप बहुत दुखी हैं, परेशान हैं और अब आप प्रभु यीशु मसीह के पास आएं हो। प्रार्थना के बाद आपको थोड़ा सा बदलाव नजर आ रहा है तो समझ जाएं कि आपके पति में बदलाव की भारी आशीष की वर्षा होने वाली है। परमेश्वर ने बदलाव के लिए कार्य शुरु कर दिया है।

अगर आपके बच्चे आज्ञाकारी नहीं हैं। आपने बहुत मेहनत की समझाने में फिर भी कोई बदलाव नहीं। आपको अपने बच्चों का भविष्य खतरे में नजर आ रहा है, इस कारण आप बहुत दुखी हैं। चिंता के कारण आप रोते–चिल्लाते हो। मगर अब प्रभु यीशु मसीह के चरणों में आए हो और प्रभु से प्रार्थना के बाद आपको थोड़ा सा भी बदलाव नजर आ रहा है तो समझ जाएं कि आपके बच्चों के जीवन में बदलाव की भारी आशीष की वर्षा होने वाली है। प्रभु कार्य कर रहे हैं।

अगर आप असफल हुए या आपको विफलता मिली, अगर आप किसी कारण निराशा में चले गए हैं, और निराशा ने आपको चारों तरफ से घेरा हुआ है। आपकी खुशी, आनन्द खत्म हो चुका है। निराशा के कारण आपको कुछ भी अच्छा नहीं लगता, काम करने को मन नहीं करता, हर समय आप चिड़चिड़े स्वभाव में रहते हो। आपने बहुत कोशिश की कि इस निराशा



से निकला जाए, मगर दलदल की तरह आप निराशा में और धसते गए। यहां तक कि आपने बहुत बार अपने मन में सोचा कि मैं आत्महत्या कर लूं। निराश, परेशान, दुखी, चिंतित, असफल हुए। अगर आप प्रभु यीशु मसीह के पास आए हो और प्रार्थना के बाद आपको थोड़ी सी आशा की किरण दिखाई दी है, तो समझ जाएं कि आप पर आशा, शांति व सफलता की भारी आशीष की वर्षा होने वाली है। प्रभु यीशु मसीह आपको खुशी, आनन्द और शांति से भर देने वाले हैं। परमेश्वर ने कार्य शुरु कर दिया है।

अगर आपके विरुद्ध कोई दुश्मन उठ कर आपको तंग, परेशान करता है। अदालत में केस लगा कर आपको पीड़ित करता है। हर प्रकार से आपकी हानि करने की सोचता है। आपके परिवार के, खेती के, पशुओं के, बिजनेस के व बच्चों के रिश्ते होने में और आपके नाम के विरुद्ध उठ खड़ा होता है और इस बात से आप बहुत परेशान हैं और अब आप प्रभु यीशु मसीह के पास मदद के लिए आए हैं कि प्रभु आपको आपके शत्रुओं पर विजय दे। अब प्रार्थना के बाद आपको थोड़ा सा भी बदलाव नजर आता है तो समझ जाएं कि भारी विजय की आशीष की वर्षा होने वाली है। परमेश्वर कहते हैं कि आप अपने शत्रुओं पर विजयी होंगे। आपके शत्रु आपसे हार जाएगें। प्रभु ने कार्य शुरु कर दिया है।

मेरे पिता जी ने मुझे एक कहानी सुनाई थी। किसी व्यक्ति की पत्नी नहर में गिर गई और डूब गई। गाँव के सब लोग उस स्त्री की लाश को ढूंढने लगे। सभी लोग नहर में जिस तरफ पानी का बहाव था , ढूंढ रहे थे मगर उस औरत का पति उल्टी तरफ ढूंढ रहा था। तब सब ने हैरान होकर पूछा कि तू पानी के बहाव की उल्टी तरफ क्यों ढूंढ रहा है?

तब उस व्यक्ति ने कहा कि जीवन भर मेरी पत्नी उल्टी ही चलती रही है। कभी मेरा कहना नहीं माना था। प्रत्येक कार्य वह उल्टा ही करती। मेरे साथ हर समय झगड़ा ही करती रहती। कई बार तो मैं दुखी होकर घर छोड़ कर मरने के लिए भी गया मगर फिर घर वापिस आ गया। जीवन भर इसने मुझे दुख

ही दुख दिया और हमेशा उल्टी चाल चलती थी। इसलिए मरने के बाद भी, पानी के बहाव के उल्ट ही गई होगी।

हो सकता है आप इस बात से परेशान हैं और आप प्रभु यीशु मसीह के पास आए हैं। प्रार्थना के बाद अगर थोड़ा सा भी बदलाव आपको अपनी पत्नी में नजर आ रहा है तो आप समझ जाएं कि आपकी पत्नी में भारी बदलाव की आशीष की वर्षा होने वाली है। चाहे आपको ''कुछ नहीं दिखता'' या छोटा–सा हाथ जितना बदलाव दिख रहा है, आनन्द, जश्न मनाना शुरु कर दें, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने आपके लिए छुटकारे, चंगाई, आशा, सफलता, लाभ व आनन्द के लिए कार्य शुरु कर दिया है।

परमेश्वर के लोगो, आप पर भारी आशीष की वर्षा होने वाली है। परमेश्वर ने आपके लिए कार्य शुरू कर दिया है।



# विश्वास में बने रहें

**आप का विश्वास मात्र उद्धार पाने वाला या चंगाई, आशीष, धन–सम्पत्ति व दुश्मनों पर विजय पाने वाला भी ?**

बहुत बार जब आप दुख, बीमारी, परेशानी, समस्या में फंस जाते हो, तो आपसे कहा जाता है कि विश्वास करो। आप कहते हैं कि हम तो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं।

मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आप कौन सा विश्वास करते हैं? मात्र मुक्ति पाने वाला या चंगाई–छुटकारे वाला व धन–सम्पत्ति पाने वाला भी। रोमियों 10:9 में लिखा है कि यदि तू अपने मुंह से प्रभु यीशु मसीह को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।

यह विश्वास ''मुक्ति पाने वाला'' हमारे लिए बहुत ही जरुरी है। अगर आप यह विश्वास करते हो तो आप निश्चय उद्धार (मुक्ति/मोक्ष) पाओगे व नरक से बच जाओगे। मगर क्या आपको यह विश्वास है कि प्रभु आपकी बीमारी ठीक कर सकता है? आपको धन–सम्पत्ति दे सकता है?

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे मुक्ति दे सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे पाप क्षमा कर सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरी बीमारी को चंगा कर सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे उस बड़े रोग को भी चंगा कर सकता है, जिसको डॉक्टर कहते हैं कि यह रोग हमारे बस में नहीं ।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे महामारी से बचा सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे धूली में से उठाकर, मेरी गरीबी दूर कर सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे कर्ज के बोझ से छुटकारा दे सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे बड़े से बड़े संकट से बाहर निकाल सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे दुश्मनों को मेरे आगे झुका सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे अदालत के केस में विजय दे सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे दुष्टआत्मा (भूत–प्रेत), जादू–ताबिज से छुटकारा दे सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे अच्छी नौकरी दे सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे बिजनेस (कामकाज) को ऊंचाई पर ले जा सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरा विवाह अच्छे जीवन साथी के साथ करवा सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह जब मेरे पास पैसे ना हो, तब भी मेरे लिए अच्छा मकान (घर) बना सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे संतान दे



सकता है, चाहे डॉक्टर की रिपोर्ट कुछ भी कहे।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे पशुओं को फलवन्त कर सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरी खेती को दूसरों की खेती से कहीं अधिक फलवन्त कर सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरी निराशा को आशा में बदल सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरी असफलता को सफलता में बदल सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरी गरीबी को अमीरी में बदल सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरी झोंपड़ी को महल में बदल सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे टूटे हुए परिवार को एक कर सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे परिवार के लड़ाई–झगड़े को दूर कर सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे घर से नशे को दूर कर सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मेरी पढ़ाई में प्रवीणता (समझ–ज्ञान) दे सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे विदेश यात्रा करवा सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे बाईक/गाड़ी दे सकता है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह सब कुछ कर सकता है, क्योंकि उसके पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार है।

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह सब कुछ कर सकता है, क्योंकि जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ। (यूहन्ना 1:10)

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह सब कुछ कर सकता है, क्योंकि सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया गया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया गया है। (इफि 1:22)

आपको यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह सब कुछ कर सकता है, क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:15–16)

पवित्र बाइबल मत्ती 9:28–30में लिखा है कि दो अन्धें प्रभु यीशु मसीह के पास चंगाई पाने के लिए आए। प्रभु ने उनसे पूछा ''क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूं?'' अब यहां पर प्रभु जी ने उनके मुक्ति पाने वाले विश्वास के विषय नहीं पूछा, बल्कि आंखों की चंगाई पाने वाले विश्वास के विषय पूछा था। तब अन्धों ने कहा, ''हां प्रभु'' (हमें विश्वास है कि आप अन्धों की आँखे खोल सकते हो)। प्रभु जी ने उनकी आँखे छूकर कहा,''तुम्हारे विश्वास (चंगाई के विश्वास) के अनुसार तुम्हारे लिए हो और अन्धों की आँखे खुल गई।

पवित्र बाइबल लूका8:50 में भी याईर नामक अगुवा अपनी बीमार बेटी की चंगाई के लिए प्रभु जी के पास आया। मगर जब वह प्रभु जी के पास पहुंचा ही था कि पीछे से उसके पास संदेश आ गया कि उसकी बेटी



मर गई है। तब याईर (लड़की का पिता) बहुत उदास हुआ। मगर प्रभु यीशु मसीह ने उससे कहा,''मत डर, केवल विश्वास रख, तो वह बच जाएगी''। यहां पर भी प्रभु जी याईर को विश्वास रखने के लिए कह रहे थे, मगर कौन सा विश्वास? मृतकों को जिंदा कर सकने वाला विश्वास। प्रभु जी ने कहा कि विश्वास रख कि मैं मृतक को भी जिंदा कर सकता हूं। याईर ने विश्वास किया और प्रभु जी ने उसकी बेटी को जिंदा कर दिया।

प्रेरितों के काम 16:30–31 में जेलर ने प्रेरित पौलुस से पूछा कि उद्धार/मुक्ति पाने के लिए मैं क्या करुं? तब पौलुस प्रेरित ने कहा उद्धार पाने के लिए प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर। यहां पर मुक्ति पाने वाले विश्वास की बात हो रही है।

उत्पत्ति 12:1–4 में अब्राहम ने क्या विश्वास किया था? अब्राहम तो विश्वासियों का पिता कहलाता है। अब्राहम ने यह विश्वास किया था कि पिता परमेश्वर उसको संतान दे सकता है, और एक बड़ी जाति बना सकता है। जबकि वह 75 वर्ष का था और उसकी कोई संतान नहीं थी। अब्राहम ने यह विश्वास किया था कि पिता परमेश्वर उसके नाम को महान कर सकता है। जबकि 75 वर्ष की आयु तक उसके नाम को लोग शापित मानते थे।

अब्राहम ने यह विश्वास किया था कि पिता परमेश्वर उसे आशीष दे सकते हैं बहुत सी जमीन/भूमि, बहुत सा धन–सम्पत्ति, जायदाद, बहुत सी भेड़, बकरी आदि पशु, बहुत सी संतान और बहुत बड़ा नाम, लोगों द्वारा आदर सम्मान। जबकि 75 वर्ष की आयु तक उसके पास कुछ नहीं था। अब्राहम ने इन सभी बातों के लिए विश्वास किया और यह सब कुछ उसके लिए हो गया।

पवित्र बाइबल में बहुत से लोगों के विषय लिखा है, जिनको परमेश्वर ने बहुत धन–सम्पत्ति दी है। यहोवा परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह उन्हें धन सम्पत्ति देंगे, उनके पशुओं को घटने नहीं देंगे, पशुओं को फलवन्त करेंगे, खेती को फलवन्त करेगें, आपके खाने–पीने की वस्तुओं पर

बहुतायत से आशीष देंगे। आपके पहनने के कपड़ों पर व रहने के स्थान (घर) को बहुत आशीष देंगे। आपकी संतान धन्य होगी। आपको कर्जा लेना नहीं पड़ेगा, जिस काम को आप हाथ लगाएंगे, वह सफल होगा। आपके शत्रु आपसे हार जाएंगे। आपको परमेश्वर सिर (अगुवा, निर्णय लेने वाला) बनाएगें। पूंछ (पीछे–पीछे चलने वाला) नहीं। दानिय्येल की तरह आपको सभी विद्याओं में प्रवीणता देंगे। राजा शाऊल, दाऊद, सुलैमान आदि की तरह राजा/अधिकारी/मंत्री बनाएंगे। आपको नरक से बचाएंगे।

आपके लिए यह सब तभी पूरा होगा, जब आप विश्वास करेंगे कि प्रभु मेरे लिए यह सब कर सकता है। अगर आप मात्र मुक्ति पाने वाला विश्वास ही करेंगें तो मात्र मुक्ति ही पाएंगे। नरक से बच जाओगे।

परमेश्वर के लोगो, आपको विश्वास करना है कि परमेश्वर आपके लिए सब कुछ कर सकने की सामर्थ्य रखते हैं। आप केवल विश्वास करें।

न्यायियों 6 अध्याए में लिखा है कि गिदोन नाम का एक व्यक्ति, मिद्यानियों के डर के मारे, दाखरस के कुण्ड में गेंहू इसलिए झाड़ रहा था कि उसे मिद्यानियों से छिपा कर रख सके। परमेश्वर के लोगों के दुश्मन मिद्यानी चढ़ाई करने (हमला करने) इस्त्राएलियों की भूमि की उपज नष्ट कर डालते थे, और इस्त्राएलियों के लिए न तो कुछ भोजनवस्तु, न भेड़–बकरी, न गाय बैल व न गदहा छोड़ते थे। दुश्मन मिद्यानी टिड्डियों के दल के समान लाखों की गिनती में आते थे और देश को उजाड़ कर वापिस चले जाते थे। इस कारण इस्त्राएली बड़ी दुर्दशा में पड़े थे। (न्यायियों 6:1–6)

गिदोन बहुत डरा हुआ था। उसका कुल मनश्शे में सब से कंगाल था व गिदोन अपने पिता के घराने में सब से छोटा था। (न्यायियों6:15) मगर परमेश्वर ने गिदोन से कहा कि तू शूरवीर सूरमा है। मैं यहोवा तेरे संग रहूंगा। तू सारे इस्त्राएलियों को दुश्मन मिद्यान के हाथ से छुड़ाएगा।

पहले तो गिदोन घबराया मगर फिर यहोवा परमेश्वर पर विश्वास किया कि वह दुश्मन पर विजय दे सकता है। इस विश्वास के अनुसार वह



300 लोगों को साथ लेकर दुश्मन को हराने जाता है। (न्यायियों 7:16) मिद्यानी और अमालेकी और सब पूर्वी लोग तो टिड्डियों के समान बहुत से तराई में फैले पड़े थे। और उनके ऊँट समुद्र तट की बालू के किनकों के समान गिनती से बाहर थे। (न्यायियों 7:12)

गिदोन के इस विश्वास के अनुसार कि यहोवा परमेश्वर दुश्मनों पर विजय दे सकता है, सच में गिदोन इतनी बड़ी सेना से जीत गया। (न्यायियों 7:20–21)

आप भी जब ''दुश्मन पर विजय पाने वाला विश्वास'' करेंगे, तब दुश्मन से जीत जाओगे। अतः आप जिस किसी भी समस्या मे हैं, आपको विश्वास करना है कि प्रभु यीशु मसीह मुझे इस समस्या से बाहर निकाल सकते हैं, तब प्रभु जी आपको निश्चय उस संकट से बाहर निकाल देंगे।

# प्रभु की आवाज सुनें

## अविश्वास पैदा करने वाली बातें अनसुनी करें

एक युद्ध की बात है कि एक बड़ी सेना ने दूसरी सेना पर हमला कर दिया। यह बड़ी सेना जीत रही थी। जब दूसरी सेना समझ गई कि वह उनसे हार रही है, तब उसकी सेना के बाकी बचे सैनिक पहाड़ों की तरफ भाग गए। वे जाकर पहाड़ों की गुफाओं में छिप गए।

बड़ी सेना के सैनिक उनके पीछे भाग कर उन्हें मार रहे थे। वे प्रत्येक गुफा के अंदर जा–जा कर, सैनिकों को ढूंढ कर मार रहे थे। हारी हुई सेना का एक सैनिक , जो प्रभु यीशु मसीह की आराधना करने वाला था, एक गुफा के अंदर छिपा हुआ था। वह सैनिक प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना करने लगा, ''हे प्रभु जी मेरी मदद करो, अगर आज आपने मेरी मदद न की तो यह दुश्मन मुझे मार देगें। हे प्रभु जी मेरी रक्षा के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजो।'

प्रार्थना करते हुए उसने गुफा के द्वार की ओर देखा, मगर वहां पर कोई स्वर्गदूत नहीं आया, बल्कि एक मकड़ी जरुर दिखाई दी। प्रभु ने कहा कि तेरे छुटकारे के लिए यह मकड़ी ही बहुत है। मगर यह सैनिक प्रार्थना करता रहा कि प्रभु जी, आपने पवित्र बाइबल में प्रतिज्ञा की है कि मैं तेरी रक्षा करुगां, अपने स्वर्गदूतों को भेजूंगा, तेरे प्राण की रक्षा करुंगा, अब हे प्रभु मेरी रक्षा के लिए आओ। मगर उस मकड़ी के इलावा कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। प्रभु ने फिर कहा कि तेरे छुटकारे के लिए यह मकड़ी ही काफी है।

उस मकड़ी ने गुफा के मुँह पर (द्वार पर) जाल बनाना शुरु कर दिया व थोड़े ही समय में उसने गुफा के पूरे द्वार पर भारी जाल बना दिया। यह सैनिक बहुत डरा हुआ था वह परमेश्वर की आवाज को अनसुना कर रहा था और दुश्मन की आवाज को सुन रहा था। चाहिए तो यह था कि परमेश्वर की आवाज को सुनता और दुश्मन की आवाज अनसुनी करता। दुश्मन की सेना के पाँवों की आवाज उसे सुनाई दे रही थी।



यह आवाज और नजदीक होती गई।

दुश्मन सेना के अधिकारी आदेश दे रहे थे कि सभी गुफाओं को अच्छे से देखो। जो भी अंदर दिखाई दे उसे मार दो। यह आवाज सुन कर मसीही सैनिक और भी तेज प्रार्थना करने लगा कि प्रभु जी अपने स्वर्गदूत भेज। दुश्मन सेना प्रत्येक गुफा के अंदर जाकर, वहां छिपे सैनिकों को गोली मार रही थी।

जब दुश्मन सैनिक इस गुफा के पास आए और अंदर जाने लगे तब उन्होंने गुफा के द्वार पर मकड़ी का जाल लगा देखा। तब आपस में बात करने लगे कि इस गुफा में तो मकड़ी का जाल लगा हुआ है, इसके अंदर कोई नहीं छिपा होगा, क्योंकि अगर कोई अंदर छिपने के लिए जाता तो यह मकड़ी का जाल टूटा हुआ होता। तब दुश्मन सैनिक गुफा के द्वार से, मकड़ी का जाल देखकर ही वापिस चले गए। गुफा के अंदर मसीह सैनिक बिलख–बिलख कर रोने लगा और प्रभु का धन्यवाद करने लगा, जिसने उसके प्राण बचाए थे।

परमेश्वर के लोगो, दुख–मुश्किल–संकट के समय आप प्रभु यीशु मसीह पर पूरा भरोसा रखें, उसकी आवाज सुनें। प्रभु अपनी योजना के अनुसार आपकी रक्षा, मदद के लिए उपाय करते हैं। बहुत बार हम स्वर्गदूत के इन्तजार में होते हैं, मगर परमेश्वर मकड़ी को भेज देते हैं, आपके छुटकारे के लिए।

परमेश्वर के प्रिय लोगो, आपको परमेश्वर की आवाज सुनना है व उन आवाजों को अनसुना करना है जो आपके विश्वास को डांवाडोल करती हैं।

हम पवित्र बाइबल में मरकुस 5 अध्याय में पढ़ते हैं कि याईर नामक आराधनालय के अगुवे की बेटी बहुत ज्यादा बीमार थी। यहां तक कि वह मरने वाली थी। तब याईर प्रभु यीशु मसीह के पास आया और विनती करने लगा कि हे प्रभु, मेरे साथ मेरे घर चलकर मेरी बेटी को बचा। जब प्रभु जी उसके साथ जाने लगा ही था कि किसी व्यक्ति ने याईर से आकर कहा कि

तेरी बेटी मर गई है। मगर प्रभु जी ने यह बात सुनकर भी अनसुना कर दिया। मरकुस 5:36 में लिखा है कि जो बात वह कह रहे थे, उसको प्रभु यीशु मसीह ने अनसुनी करके, आराधनालय के अगुवे से कहा, '' मत डर (अविश्वास की बातों को अनसुना कर) केवल विश्वास रख।''

प्रभु जी हमें यही सिखाना चाहते हैं कि हम प्रभु परमेश्वर की आवाज सुनें और इसके साथ–साथ यह भी जरुरी है कि हम शैतान की आवाज न सुनें। हम उन बातों को अनसुना करें जो हमारे अंदर अविश्वास पैदा कर सकती हैं।

हम यूहन्ना 2 अध्याय में पढ़ते हैं कि काना गलील की एक शादी में बहुत बड़ी मुश्किल पैदा हो गई थी, जब दाखरस खत्म हो गया था। वो लोग बहुत दुखी थे, चिंतित थे, परेशान थे कि आखिर कैसे इस बड़ी समस्या से बाहर निकला जाए।

तब यह बात प्रभु यीशु मसीह के पास पहुंची । प्रभु जी ने काम करने वाले सेवकों से कहा कि इन खाली मटकों में पानी भर दो। तब काम करने वाले सेवकों ने मटकों में पानी मुँहामुँह भर दिया। और प्रभु जी के चमत्कार से पानी दाखरस बन गया। क्योंकि काम करने वाले सेवकों ने प्रभु जी की आवाज को सुना और लोगों की अविश्वास पैदा करने वाली बातों को अनसुना कर दिया।

आप क्या सोच रहे हैं? क्या मटकों में पानी दस मिनट में भर गया था? जी नहीं, मटकों में पानी 600 लीटर से भी ज्यादा भरा गया था। ( यूहन्ना 2:6 ) हो सकता कुछ लोग पूछ रहे हों कि इन मटकों में पानी क्यों भरा जा रहा है, क्योंकि यह मटके तो यहूदियों की शुद्ध करने की रीति के लिए रखे गए थे, और इनमें पानी भरने की उस समय बिल्कुल जरुरत नहीं थी, मगर काम करने वाले सेवकों ने पानी मुँहामुँह भर दिया। जितना भरा, उतना ही दाखरस बन गया।

प्रभु के लोगो, आप भी प्रभु जी की आवाज सुनें। पतरस सारी रात



मछलियां पकड़ता रहा मगर पूरी रात में एक भी मछली न पकड़ी। (लूका 5:5) मगर जब प्रभु यीशु मसीह की आवाज सुन कर जाल डाला तो मछलियों से जाल भर गया। लूका 5:6 में लिखा है कि जब पतरस ने ऐसा किया, तो बहुत सारी मछलियां घेर लाए।

पतरस का घर मैंने देखा है। पतरस के घर के बिल्कुल पास ही झील है, जिस में मछली पकड़ी जाती थी। पतरस के दादा जी जब मछली पकड़ने जाते थे, तब पतरस छोटा सा लड़का था, मगर फिर भी बहुत बार साथ जाकर मछली पकड़ना सीखता था। अपने पिता जी के साथ भी पतरस मछली पकड़ने जाता था। फिर शादी के बाद पतरस दूसरे लोगों के साथ मछली पकड़ा करता था। पतरस प्रभु जी से कह सकता था कि इस काम का मुझे तो बहुत पुराना अनुभव है। मैं क्यों आपकी आवाज सुनूं? आपकी बात क्यों मानूं?

प्रभु के लोगो, पतरस ने अपने बड़े अनुभव पर घमण्ड नहीं किया, बल्कि चुपचाप प्रभु जी की आवाज सुनकर जाल डाल दिया। बहुत बार हम मुश्किल समय में अपनी योग्यता पर घमण्ड करते हैं, अपने तरीके अपनाते हैं, अपनी सोच के अनुसार करते हैं, मगर प्रभु यीशु मसीह की आवाज नहीं सुनते। इस कारण मुश्किल में पड़े रहते हैं। आप जितनी जल्दी प्रभु जी की आवाज सुनेंगे, उतनी जल्दी छुटकारा पाएंगें, आशीष पाएंगें।

2 राजा 5 अध्याय में सेनापति नामान कोढ़ी के विषय लिखा है। सेनापति उतने समय तक कोढ़ी रहा, जब तक उसने परमेश्वर की आवाज नहीं सुनी। आवाज सुनकर वैसा करना ही असल में सुनना होता है। ''तब नामान सेनापति ने परमेश्वर के भक्त एलीशा के वचन के अनुसार यरदन को जाकर उसमें सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया, और वह कोढ़ से चंगा हो गया। (2राजाओं 5:14)

जब तक नामान सेनापति आना–कानी करता रहा, अपनी ऊँची पदवी को सोचता रहा, अपनी समझ का सहारा लेता रहा, परमेश्वर के दास की बात (परमेश्वर की बात) को अनसुनी करता रहा, तब तक कोढ़ी ही बना रहा।

परमेश्वर के लोगों, आप अपनी मुश्किल, समस्या, बीमारी, दुख में बस प्रभु जी की आवाज सुनकर वैसा ही करें। तब तुरन्त छुटकारा होगा। आप आशीष पाएंगें।

1राजाओं 17 अध्याय में भी हम अकाल और सारपत नगर की विधवा के विषय पढ़ते हैं। इतने भयंकर अकाल में विधवा व उसका बेटा सोच रहे थे कि हम भी दूसरे लोगों की तरह ही भूख–प्यास से मर जाएंगें। उनके घर मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल था।

मगर जब परमेश्वर का दास एलिय्याह उनके घर गया और उन्हें कहा, ''मत डर ..... पहले मेरे लिए एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आ। फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिए बनाना। क्योंकि यहोवा परमेश्वर यों कहता है कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा (जब तक अकाल खत्म न हो) तब तक न तो उस घड़े का मैदा समाप्त होगा और न उस कुप्पी का तेल घटेगा। ''(1राजाओं 17:14)

परमेश्वर के लोगो, अब यह विधवा या तो परमेश्वर की आवाज सुनती या हालात की आवाज सुनती। उसे मालूम था कि लोग अकाल से मर रहे हैं और मैं और मेरा बेटा भी मर जाएंगें। आखिर उस विधवा ने परमेश्वर की आवाज सुनने का फैसला कर लिया। जैसे ही उसने परमेश्वर की आवाज को सुनकर वैसा ही किया, तब से लेकर अकाल के दिनों में उस घर से मैदा और तेल खत्म नहीं हुए। 1राजाओं 17:15 में लिखा है, तब वह चली गई और एलिय्याह के वचन (परमेश्वर के वचन जो एलिय्याह ने कहे थे) के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री, उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे।

प्रिय लोगो, जब–जब परमेश्वर के लोगों ने, परमेश्वर की आवाज को सुना और शैतान की आवाज, अविश्वास पैदा करने वाले लोगों की आवाज को अनसुना किया, परमेश्वर उन्हें संकट से बाहर निकालते रहे।

नूह ने परमेश्वर की आवाज को सुना तो केवल वह और उसका



परिवार बचा, बाकी पूरी पृथ्वी जल प्रलय से नष्ट हो गई। (उत्पत्ति 7)

अब्राहम ने परमेश्वर की आवाज को सुना तो परमेश्वर ने उसके नाम को महान किया व उसके वंश को पृथ्वी भर में बढ़ाया। उसको आशीष का मूल बनाया।

यूसुफ ने परमेश्वर की आवाज को सुना तो वह मिस्र देश का प्रधानमंत्री बनाया गया। शमूएल ने परमेश्वर की आवाज को सुना तो वह महान नबी बना, उसके द्वारा राजाओं का अभिषेक हुआ।

दाऊद ने परमेश्वर की आवाज को सुना तो वह राजा बनाया गया। गिदोन ने परमेश्वर की आवाज को सुना तो वह प्रशासक बनाया गया। उसने महान विजय हासिल की। शद्रक, मेशक, अबेदनगो ने परमेश्वर की आवाज को सुना तो जब वे आग में डाले गए, उनकी कुछ हानि न हुई। जब दानिय्येल ने परमेश्वर की आवाज को सुना तो शेरों का मुँह बन्द हो गया। शेर दानिय्येल की हानि न कर सके।

प्रभु के लोगो, ऐसे हजारों लोग हैं, जिन्होंने परमेश्वर की आवाज को सुना, अविश्वास पैदा करने वाली आवाज को अनसुना किया, तब वे लोग कष्ट, संकट, हानि से बच गए। आप भी प्रभु जी की आवाज को सुनें व छुटकारा पाएं।

यह अच्छी बात नहीं होती कि हम मात्र संकट में ही प्रभु की आवाज सुनें व आज्ञा पालन करें, बल्कि प्रत्येक समय हम प्रभु जी की आवाज सुनें। ऐसा ही करने से हमारा घर, हमारा निवासस्थान परमेश्वर के तेज से भरा रहेगा। परमेश्वर आपको संकट से बचाए रखेंगे।

निर्गमन 40 अध्याय हमें सिखाता है कि कैसे मूसा ने परमेश्वर की आवाज को सुना और वैसा ही किया था।

''इस प्रकार मूसा ने, जो जो आज्ञा यहोवा परमेश्वर ने उसको दी थी उसी के अनुसार किया।'' (निर्ग 40:16)

''उसने (मूसा ने)..... किया, जिस प्रकार परमेश्वर ने मूसा को

आज्ञा दी थी।'' (निर्ग 40:21)

'' (मूसा ने वैसा किया)....., जिस प्रकार परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी।'' (निर्ग 40:23)

'' (मूसा ने वैसा किया)....., जिस प्रकार परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी।'' (निर्ग 40:25)

''(मूसा ने वैसा किया)....., जिस प्रकार परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी।'' (निर्ग 40:27)

''(मूसा ने वैसा किया)....., जिस प्रकार परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी।'' (निर्ग 40:29)

''(मूसा ने वैसा किया)....., जिस प्रकार परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी।'' (निर्ग 40:32)

''(जैसे परमेश्वर ने कहा था).....मूसा ने सब काम को पूरा किया।'' (निर्ग 40:33)

तब.....यहोवा का तेज निवासस्थान में भर गया। (निर्ग 40:34–35)

परमेश्वर के प्रिय लोगो, मूसा परमेश्वर का जन वैसा ही करता गया, जैसा उसने परमेश्वर से सुना था। तब परमेश्वर का तेज निवासस्थान में भर गया। आप भी जब परमेश्वर की आवाज सुनेंगें, और वैसा ही करेंगे, तब आपका निवासस्थान भी परमेश्वर के तेज, महिमा, जलाल से भर जाएगा। तब दुष्टआत्मा–शैतान तुम्हारे आगे से भाग जाएगा। तुम्हारी कुछ हानि न कर सकेगा। तुम समस्या से बाहर निकल आओगे।



# सामना करने के लिए खड़े रहें

## परमेश्वर का या शैतान का ????

''परमेश्वर के अधीन हो जाओ, और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।'' (याकूब 4:7–8)

हम इस वचन के उल्ट करते हैं। हम परमेश्वर का सामना करते हैं व शैतान के अधीन हो जाते हैं। जबकि वचन कहता है कि हमें शैतान का सामना करना व परमेश्वर के अधीन होना चाहिए।

परमेश्वर के लोगों नीतिवचन 24:10 में लिखा है ''यदि तू विपत्ति के समय साहस छोड़ दे, तो तेरी शक्ति बहुत कम है।''

अकसर देखा गया है कि जब भी कोई विपत्ति आती है, लोग घबरा जाते हैं, डर जाते हैं। कुछ लोगों का चिंता के कारण ब्लड प्रैशर कम हो जाता है व कुछ का ज्यादा हो जाता है। फिर उन्हें सूझता नहीं कि वह क्या करें और क्या न करें। तब उस समय हमें परमेश्वर के अधीन होना होता है व शैतान का सामना करना होता हैं मगर अफसोस कि हम परमेश्वर का सामना करते हैं। ''परमेश्वर को ऐसा नहीं करना चाहिए था,'' ''प्रभु ने यह अच्छा नहीं किया,'' ''परमेश्वर ने जो वचन में वादे किए हैं, वह पूरे तो कर नहीं रहा'' आदि बहुत सी बातें परमेश्वर के खिलाफ करते हैं। इसका अर्थ कि हम शैतान के अधीन हो जाते हैं। इस कारण हम उस विपत्ति में लम्बे समय तक पड़े रहते हैं।

2इति.20:17 में भी परमेश्वर का वचन कहता हैं ''इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा। हे यहूदा और हे यरुशलेम, ठहरे रहना और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना। मत डरो, और तुम्हारा मन कच्चा न हो, कल उनका सामना करने को चलना और यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा। यह घटना राजा यहोशापात के समय की है, जब दुश्मनों ने लाखों की गिनती

में सेना से, उस पर चढ़ाई कर दी थी। परमेश्वर यहोवा ने अपने लोगों से कहा था कि तुम उनका सामना करने जाना। युद्ध तुम्हारा नहीं, मेरा है। सच में जब वे सामना करने को गए, वहां उन्हें कोई युद्ध नहीं करना पड़ा। बस वे यहोवा की महिमा के गीत गाते रहे और दुश्मन नष्ट हो गया। दुश्मनों में से एक भी नहीं बचा, और परमेश्वर के लोगों को युद्ध भी नहीं करना पड़ा।

परमेश्वर के लोगो, बस आपको दुश्मन/ विपत्ति/ परेशानी/ गरीबी/ दुख या संकट में सामना करने के लिए खड़े रहना है। मगर याद रखें, हम परमेश्वर के अधीन रह कर ही विजय पा सकते हैं। शैतान/ समस्या/ विपत्ति भाग जाएगी। कभी भी हमें परमेश्वर का सामना नहीं करना चाहिए। कभी भी हमें उल्ट नहीं चलना चाहिए। हमें शैतान के अधीन नहीं होना व परमेश्वर का सामना नहीं करना चाहिए।

चाहे आपके सामने बड़ी से बड़ी पहाड़ जितनी समस्या आ जाए, आप परवाह न करें। क्योंकि परमेश्वर कहते हैं, ''न तो (आपके) बल से न (आपकी) शक्ति से, परन्तु मेरे (परमेश्वर) के आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। हे बड़े पहाड़ (बड़ी समस्या, बड़ा संकट, बड़ी बीमारी, बड़ी मुसीबत, बड़ी दुश्मनों की कार्यवाही, बड़ी असफलता, बड़ी हानि) तू क्या है? जरुब्बाबेल (परमेश्वर के लोगों) के सामने तू मैदान (खत्म हो जाएगी, पांव के नीचे हो जाएगी) हो जाएगा। (जकर्याह 4:6–7)

इसलिए, प्रभु के प्रिय लोगो, बड़े संकट में भी परवाह न करो। बड़े से बड़ा पहाड़, संकट तुम्हारे पाँव के नीचे होगा।



# परमेश्वर के दास को घर बुलाएं

## जो दुख/ रोग है, उससे छुटकारा व आने वाली मुसीबतों से भी छुटकारा

प्रभु का दास याकूब, यरुशलेम में सभी कलीसियाओं के हैड ऑफिस का मुख्य अगुवा था। यह याकूब, प्रभु यीशु मसीह की माँ मरियम व मरियम के पति यूसुफ का बड़ा बेटा था। प्रभु यीशु मसीह के पैदा होने के बाद मरियम व यूसुफ पति–पत्नी की तरह रहने लगे थे, और उन दोनों से जो पहली संतान पैदा हुई, उसका नाम याकूब है। उसी ने यह पत्री याकूब की पत्री लिखी है।

''यदि तुम में कोई रोगी है, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु यीशु मसीह के नाम से उस पर तेल मलकर उसके लिए प्रार्थना करें। विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसे उठाकर खड़ा करेगा और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी।' (याकूब 5:14–15)

परमेश्वर के लोगों, जब हम परमेश्वर के दास को अपने घर बुलाते हैं तो परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह हमारी बीमारी, रोग, संकट से हमें छुटकारा देते हैं। हमारे पाप भी क्षमा हो जाते हैं। इतना ही नहीं प्रभु आने वाली मुश्किल/ विपत्ति से बचाकर हमें बहुत आशीष देते हैं। इस अध्याय में हम पवित्र बाइबल के इतिहास को भी देखेंगे कि कैसे जब परमेश्वर के दास को घर बुलाया तो आशीषों की बरसात उन पर हुई।

प्रेरित याकूब ने यह पत्र जिसको पवित्र बाइबल याकूब की पत्री कहती है, सभी विश्वासियों के लिए लिखी है। परमेश्वर का दास, इस पत्री के द्वारा आज भी हमें समझाता है कि रोग/ बीमारी/ मुश्किल के समय हमें परमेश्वर के दासों को अपने घर बुलाना चाहिए। इससे हमारे रोग ठीक होंगे व हमारे पाप भी, अगर हमने कोई किए हैं तो क्षमा हो जाएंगे। यह बात सिर्फ बीमारी तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि प्रभु यीशु मसीह अपने दासों के द्वारा

आपके घर में शांति देंगे, हर प्रकार की आशीष देंगे, परिवार पर आशीष देंगे, आपकी धन–सम्पत्ति पर आशीष देंगे, आपके बिजनेस में आशीष देंगे व आपको आत्मिक आशीष देंगे।

प्रेरित पौलुस यह सब बातें जानते थे। इसलिए ही उन्होंने रोमियों 1:11 में लिखा है, ''मैं तुमसे मिलने की लालसा करता हूं कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं जिससे तुम स्थिर हो जाओ।'' परमेश्वर के दास कहते हैं कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा या तुम्हारे घर आऊंगा तो मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूंगा। मेरे द्वारा (परमेश्वर के दास द्वारा) दिए गए वरदान से तुम स्थिर, मजबूत व आशीषित हो जाओगे।

परमेश्वर का दास पौलुस इतने पर ही बस नहीं कर देते, बल्कि और भी अधिक वह रोमियों15:29 में लिखते हैं, ''मैं जानता हूं कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा, तो मसीह की पूरी आशीष के साथ आऊंगा।'' प्रेरित पौलुस पर, प्रभु यीशु मसीह का बहुत बड़ा अनुग्रह था, प्रभु ने उसे बहुत समझ, ज्ञान, प्रकाशन दिया हुआ था। प्रेरित पौलुस, परमेश्वर के सिद्धांत को जानता था कि परमेश्वर अपने दासों के द्वारा आशीष देते हैं। इसलिए ही इतनी बड़ी बात को लिखा गया कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा, तुम्हारे घर आऊंगा तो मसीह की थोड़ी सी आशीषों जैसे बीमारी से चंगाई, दुष्टात्मा से छुटकारा, पापों की क्षमा की आशीष ही नहीं, बल्कि मसीह (प्रभु) की पूरी आशीषों को साथ लेकर आऊंगा और आपको पूरी आशीष दूंगा।

प्रेरित पौलुस अच्छी तरह से जानता था कि जब उसके पास कोई भी आशीष नहीं थी, जब उसके पाप क्षमा नहीं हुए थे, जब उसका परमेश्वर के साथ मेल नहीं हुआ था, जब वह अनन्त जीवन का भागी नहीं हुआ था, जब उसे पवित्र आत्मा व पवित्र आत्मा के वरदान नहीं मिले थे, जब उसके पास चंगाई का वरदान नहीं था , जब वह परमेश्वर से दूर और अंधकार के वश में था। उस समय एक परमेश्वर का दास हनन्याह उसके पास आया था। उस परमेश्वर के दास हनन्याह ने जब पौलुस पर हाथ रखे थे तब पौलुस की आँखों से छिलके से गिरे थे व वह देखने लग गया था। प्रभु के



दास हनन्याह के हाथ रखने पर ही पौलुस पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया था व पौलुस ने बपतिस्मा लिया था। (प्रेरित 9:17–18)

परमेश्वर के दास हनन्याह ने जब पौलुस (जिसका पहले नाम शाऊल था, जो पहले मसीह लोगों का दुश्मन था) के पास जाकर हाथ रखे तब पौलुस, शाऊल से पौलुस बना, उसके पाप क्षमा हुए, शारीरिक दुर्बलता दूर हुई, परमेश्वर के साथ मेल हुआ, स्वर्ग में जीवन की पुस्तक में नाम लिखा गया, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, पवित्र आत्मा के सभी 9 वरदान भी पाए व शाऊल से प्रेरित पौलुस बन गया।

प्रेरित पौलुस जानता था कि दमिश्क के रास्ते में प्रभु यीशु मसीह ने उसको दर्शन तो दिया, बातचीत भी की, लेकिन मसीह की पूरी आशीष के लिए उसे परमेश्वर के दास (हनन्याह) की जरुरत थी। प्रभु जी ने भी यही संदेश पौलुस को सुनाया था। इस कारण ही प्रेरित पौलुस ने लिखा है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा तो प्रभु यीशु मसीह की पूरी आशीषों के साथ आऊंगा। क्योंकि प्रभु का दास हनन्याह भी जब पौलुस के पास आया था तो मसीह प्रभु की पूरी आशीष के साथ आया था।

प्रेरितों के काम 10 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि कुरनेलियुस नाम का एक मनुष्य था, जो सूबेदार था। वह भक्त था, अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था और परमेश्वर के लोगों को बहुत दान देता था और बराबर नियमित रुप से परमेश्वर से प्रार्थना करता था।

वाह! इतना अच्छा व्यक्ति। परमेश्वर कुरनेलियुस से बहुत ही, बहुत ही, बहुत ही, बहुत ही प्रसन्न थे।

एक दिन परमेश्वर ने दोपहर को अपने स्वर्गदूत को भेज कर कुरनेलियुस को संदेश दिया कि परमेश्वर उस से बहुत प्रसन्न हैं। स्वर्गदूत ने स्पष्ट रुप में बात की, दर्शन दिया और कहा, ''तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिए परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं।'' आप सोच सकते हैं कि उस समय कुरनेलियुस को कितना बड़ा आनन्द हुआ होगा। उसकी खुशी का कोई

ठिकाना न रहा। वह आनन्द से नाचने लगा होगा। अपने सब मित्रों व रिश्तेदारों को अपने घर बुलाया। उन्हें सब बातें बताई क्योंकि परमेश्वर ने खुद उसके धर्मी होने पर मुहर लगा दी थी, उसके भक्त होने, दान देने, प्रार्थना करने व परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति होने का स्टीफिकेट परमेश्वर ने खुद कुरनेलियुस को दे दिया था।

मगर परमेश्वर के लोगो, इस खुशी के मौके पर एक और बात जो परमेश्वर की ओर से स्वर्गदूत ने कही थी, उसको मत भूल जाना। यह बात याद रखना बहुत जरुरी है जिससे आपके घर परिवार में आशीष आएगी व आपकी बीमारी/ निराशा/ असफलता/ हानि दूर हो जाएगी। वह बात प्रेरित 10:5 में लिखी है। स्वर्गदूत ने कुरनेलियुस से कहा, ''अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस (परमेश्वर का दास) कहलाता है, (अपने घर) बुलवा ले।''

परमेश्वर के अति प्रिय लोगो, प्रेरितों के काम 10 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि जब प्रभु का दास पतरस, कुरनेलियुस के घर आया तो प्रभु यीशु मसीह की पूरी आशीषों के साथ आया। प्रभु के दास पतरस के द्वारा कुरनेलियुस, उसके परिवार व उसके मित्रों पर बहुतायत से आशीष आई। सबसे बड़ी बात उन्होंने पवित्र आत्मा पाया व सभी अन्य भाषा बोलने लगे। सभी ने बपतिस्मा लिया। उनके नाम स्वर्ग में जीवन की पुस्तक में लिखे गए, सभी के पाप क्षमा हो गए, सभी का मेल परमेश्वर से हो गया। वहां आनन्द ही आनन्द हो गया। उनमें से कई बीमार थे तो वो भी चंगे किए गए, दुष्टात्मा से जकड़े छुड़ाए गए। हल्लिलूयाह, परमेश्वर की स्तुति हो।

1राजाओं 17 अध्याय में जब परमेश्वर के अति प्रिय दास एलिय्याह के समय, देश में वर्षा न होने के कारण भारी अकाल पड़ा, तब लोग पशुओं को खाने लगे, फिर अपनी बाहों व शरीर के अन्य हिस्से का मांस खाने लगे ताकि वे लोग जीवत रह सकें।

इसी समय में सारपत नगर में एक विधवा रहती थी। उसका एक ही बेटा था। इस भंयकर अकाल में उनके घर एक मुट्ठी आटा बचा था।



मां–बेटा जानते थे कि यह आटा एक ही दिन में खत्म हो जाएगा और कुछ दिन के बाद दोनों भूख से मर जाएंगे। उनके पड़ोसी, रिश्तेदार व अन्य लोग भूख से मर चुके थे, मर रहे थे।

मगर जब परमेश्वर का दास उस घर में आया, तब परमेश्वर की सारी आशीषों के साथ आया। उस विधवा औरत ने पहले तो यह सोचा था कि यह मेरे घर से रोटी आदि लेने आया है, मगर बाद में समझ गई कि परमेश्वर का दास हमारे घर से कुछ लेने नहीं बल्कि आशीष देने आया है।

आप जानते ही हैं कि जब तक अकाल रहा, तब तक उनके घर खाने–पीने की किसी वस्तु की कमी न आई। अकाल खत्म होते ही उस घर में और भी बहुत आशीषें आ ही गई होंगी। (1राजाओं 17:16) न सिर्फ विधवा के घर खाने–पीने की वस्तुओं पर आशीष हुई, बल्कि उस घर में चंगाई व छुटकारा भी आया होगा। उन्होंने परमेश्वर को पा लिया होगा। उनका परमेश्वर के साथ निजी सम्बन्ध बन गया होगा। क्योंकि प्रभु के दास हमेशा उनको परमेश्वर का ज्ञान सिखाते होंगे। आश्चर्यकर्म सुन–सुन कर उस विधवा व उसके बेटे का यहोवा पर विश्वास कितना ज्यादा बढ़ गया होगा। और विश्वास से ही परमेश्वर प्रसन्न होते हैं। वाह! अद्‌भुत! इस विधवा के घर में कितना आनन्द हुआ होगा।

2राजा 4:8–17 में भी हम पढ़ते हैं कि प्रभु के दास एलीशा को जब शूनेम नगर की कुलीन स्त्री ने बार–बार अपने घर बुलाया, तब प्रभु का दास एलीशा, उनके घर परमेश्वर यहोवा की पूरी आशीषों के साथ गया ।

जब परमेश्वर के दास एलीशा को पता चला कि उस औरत की कोई संतान नहीं है व पति–पत्नी बूढ़े हैं, तब एलीशा ने उसे यहोवा परमेश्वर के नाम से आशीष दी और उनके घर एक बेटा उत्पन्न हुआ।

यह औरत निराश हो चुकी थी। क्योंकि उनके पास धन–सम्पत्ति तो थी पर संतान नहीं थी। अंदर ही अंदर वह रोते रहते। निराश, परेशान, दुखी थे, मगर जैसे ही परमेश्वर के दास को घर बुलाया गया, उस घर में आशीष

आ गई। उस घर में आनन्द आ गया। चारों तरफ खुशियां ही खुशियां। सब लोग बहुत आनन्दित थे। उनका यहोवा परमेश्वर पर विश्वास बहुत बढ़ गया। वे सब परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

यह सब बातें मैं क्यों लिख रहा हूं? ताकि आप भी परमेश्वर के दास को अपने घर बुलाएं व प्रभु यीशु मसीह की सारी आशीष पाएं। शारीरिक आशीष, आर्थिक आशीष, आत्मिक आशीष पाएं। आपकी प्रत्येक समस्या दूर हो जाएगी, चाहे वो समस्या कितनी ही बड़ी क्यों न हो।



# मन्नत मानें

''मैं होमबलि लेकर तेरे भवन में आऊंगा, मैं उन मन्नतों को तेरे लिए पूरी करुंगा, जो मैंने मुँह खोलकर मानीं, और संकट के समय कहीं थी ''
(भजन 66:13–14)

मन्नत के विषय हम पुराना नियम में बहुत बार और नया नियम में कुछ स्थानों पर पढ़ते हैं। पुराना नियम में यह बात आम थी। अकसर ही लोग संकट के समय परमेश्वर के सामने मन्नत मानते थे। जब उनका दुख, संकट, परेशानी खत्म हो जाती थी, तब वे अपनी मन्नत को पूरा भी करते थे।

हम परमेश्वर के पवित्र वचन में देखते हैं कि मन्नत मानने से, उन लोगों की बड़ी से बड़ी पीड़ा समाप्त हुई। बहुत बड़े –बड़े युद्ध जीते गए।

पवित्र बाइबल 1शमूएल 1अध्याय में लिखा है कि एप्रैम के पहाड़ी देश के रामातैमसोपीय नगर का निवासी एल्काना नामक एक पुरुष था। उसकी पत्नी हन्ना के कोई भी संतान न थी। उनकी शादी को कई वर्ष हो चुके थे। रिश्तेदार व अन्य लोग हन्ना को बांझ होने के कारण बहुत चिढ़ाते थे। इसलिए हन्ना बहुत ही दुखी थी। व रोती रहती और बहुत बार खाना भी नहीं खाती थी। (1शमूएल 1:1–2,6–7 )

बहुत वर्ष तक वह चिढ़ाई जाती रही, परेशान की जाती रही। वह अपने मन में बहुत दुखी थी। तब एक दिन हन्ना परमेश्वर के भवन में गई और परमेश्वर से प्रार्थना करने और बिलख– बिलख कर रोने लगी। तब हन्ना ने यह मन्नत मानी, ''हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू अपनी दासी के दुख पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि ले, और अपनी दासी को पुत्र दे, तो मैं उसे उसके जीवन भर के लिए यहोवा को अर्पण करुंगी। ''
(1शमूएल1:10–11)

तब परमेश्वर के दास एली ने कहा, '' कुशल से चली जा, ..... परमेश्वर तुझे मन चाहा वर दे।''(1शमूएल1:17)

परमेश्वर ने उसकी मन्नत सुनकर, ग्रहण की, और परमेश्वर ने उसे एक बेटा दिया, जिसका नाम शमूएल रखा। जब उस बच्चे का दूध छुड़ाया गया, तब हन्ना ने उसे परमेश्वर के भवन में आकर, परमेश्वर को अर्पण कर दिया।

यही बच्चा शमूएल बड़ा होकर राजाओं को नियुक्त करने वाला व एक महान नबी बना। परमेश्वर ने उस बालक के बदले में, जो अर्पण किया गया था, हन्ना को तीन बेटे और दो बेटियां दी (1 शमूएल 2–20:21)

परमेश्वर के लोगो, सच में बड़े से बड़े संकट में जब मन्नत मानी गई, तब परमेश्वर ने उन्हें संकट से छुड़ाया। मगर एक बात जरुर याद रखें कि जो भी आप मन्नत माने उसे पूरा करें।

''जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिए मन्नत मानें, तो उसे पूरी करने में विलम्ब न करना। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा और विलम्ब करने से तू पापी ठहरेगा।'' (व्यवस्था23:21)

''जब तू परमेश्वर के लिए मन्नत मानें, तब उसके पूरा करने में विलम्ब न करना.....जो मन्नत तुने मानीं हो उसे पूरी करना।'' (सभो 5:4)



# समस्या के समय उपवास रखें

परमेश्वर के वचन बाइबल में हम बहुत बार पढ़ते हैं, जब उपवास रखने वालों की बड़ी से बड़ी, बड़ी से बड़ी, बड़ी से बहुत बड़ी समस्या दूर हुई है।

''तब मैं ने (एज्रा नबी ने) ..... उपवास का प्रचार इस आशय से किया कि हम .....परमेश्वर से अपने और अपने बाल बच्चों और अपनी समस्त सम्पत्ति (धन–जायदाद) के लिए सरल यात्रा मांगें।'' (एज्रा 8:21)

''इस विषय पर हम ने उपवास करके अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उसने हमारी (प्रार्थना) सुनी।'' (एज्रा 8:23)

इस वचन से पता चलता है कि जब हम अपने लिए, अपने परिवार, अपने बच्चों, अपनी धन–सम्पत्ति, अपने पशु, अपनी खेती, अपनी सांसारिक यात्रा, अपनी बीमारी, अपने संकट, अपनी पीड़ा, अपनी बड़ी से बड़ी मुश्किल, विपत्ति, चिन्ता, निराशा से छुटकारे के लिए उपवास करते हैं, तब हमारा परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनकर, हमें छुटकारा देते हैं।

यह उस समय की बात है जब बेबीलोन का राजा यरुशलेम पर हमला कर, यहूदियों को बन्दी बना कर अपने देश ले गया था। और कई वर्ष बाद एज्रा नबी की अगुवाई में यहूदियों का एक और दल यरुशलेम वापस आ रहा था। जिस से यरुशलेम में परमेश्वर की उपासना पुनः आरम्भ की जा सके। उपवास के द्वारा शुरु किए गए कार्य को परमेश्वर ने पूरा भी किया। प्रभु की स्तुति हो। आमीन

यशायाह 58:8–9 में लिखा है, तब (जब तू उपवास रखेगा) तेरा प्रकाश पौ फटने के समान चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा (प्रत्येक बीमारी, मुश्किल, चिन्ता, बोझ, परेशानी, सताव, दुख आदि से) तेरा धर्म (धार्मिकता) तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते

चलेगा। तब तू पुकारेगा, और यहोवा उत्तर देगा (छुटकारा देगा), तू दोहाई देगा और परमेश्वर कहेगा, ''मैं यहां हूँ।''

परमेश्वर के लोगो, सच में जब आप संकट में उपवास रखेंगे, तो प्रभु परमेश्वर आपको सभी मुश्किलों से बाहर निकालेगा।

अब मैं पवित्र बाइबल के अनुसार उन बड़ी बड़ी घटनाओं के विषय बताना चाहता हूँ, जब उन लोगों ने परेशानी, संकट में पड़ते समय उपवास रखा और प्रभु ने उन्हें छुटकारा दिया। पवित्र बाइबल में, योना नबी की पुस्तक में हम उपवास के महत्त्व को पढ़ते हैं। यह घटना विशाल अश्शूरी साम्राज्य की राजधानी, नीनवे नगर की है। नीनवे नगर बहुत बड़ा नगर था, नीनवे की कुल आबादी 1 लाख 20 हजार थी। अश्शूरी साम्राज्य, परमेश्वर के लोगों का इस्त्राएल का सबसे खतरनाक शत्रु था।

नीनवे के लोग बहुत ही दुष्ट थे। तब परमेश्वर ने योना नबी से कहा कि वह नीनवे नगर में जाकर, लोगों को बताए कि उनकी (नीनवे की) बुराई परमेश्वर की दृष्टि में बढ़ गई है। (योना 1:1–2)

योना ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। योना परमेश्वर की आज्ञा के उलट तर्शीश को भाग जाने के लिए, एक समुद्री जहाज पर चढ़ गया।

तब यहोवा ने समुद्र में एक प्रचण्ड आंधी चलाई। जहाज के लोग घबरा गए। मृत्यु उनको दिखाई देने लगी। मगर जब चिट्ठी डालकर पता किया गया कि यह विपत्ति उन पर क्यों आई है? तो चिट्ठी योना के नाम निकली। आखिर योना ने अपनी पूरी बात बता दी। फिर योना के कहने पर योना को समुद्र में फेंक दिया गया। तब समुद्र शांत हो गया। मगर परमेश्वर ने योना को बचाने के लिए एक बड़ा मच्छ ठहराया था। इस प्रकार योना तीन दिन–रात महामच्छ के पेट में रहा, और पेट में ही प्रार्थना करता रहा कि प्रभु अब मुझे बचा मैं तेरी आज्ञा का पालन करुंगा। तब परमेश्वर ने मच्छ को आज्ञा दी, और उसने योना को भूमि पर उगल दिया। (योना 2:1,10)



तब परमेश्वर ने योना नबी से दुबारा कहा कि नीनवे नगर के लोगों को प्रचार कर कि उनकी दुष्टता बहुत बढ़ गई है, अब से 40 दिन के बीतने पर मैं परमेश्वर, नीनवे को उलट दूँगा, सब कुछ नष्ट कर दूँगा।

नीनवे नगर के लोगों ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया। जब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुँचा, वह अपने सिहांसन पर से उठ कर, नीचे जमीन पर राख में बैठ गया। राजा ने उपवास का प्रचार करवाया कि बड़े से लेकर छोटे तक क्या मनुष्य, क्या पशु कोई भी न कुछ खाए और न कुछ पीए। सब लोग उपवास रख कर, अपने पापों का पश्चाताप करें। सम्भव है, परमेश्वर दया करे और अपनी इच्छा बदल दे, और हम नष्ट होने से बच जाएं। (योना 3:5–9)

''जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा कि वे कुकर्म से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया।

परमेश्वर के लोगो, आप इस वचन से उपवास के महत्त्व को अच्छे से समझ गए होंगे। अगर नीनवे के सभी लोग उपवास न रखते तो नीनवे नगर के 1 लाख 20 हजार मनुष्य और सभी घरेलू पशु, जानवर मर जाते। पूरा नगर उलट दिया जाता। घर, इमारतें सब कुछ नष्ट हो जाता। सब कुछ बर्बाद हो जाता। मगर उपवास रख कर, दीन होकर, पश्चाताप करने के द्वारा सब लोग बच गए। इसलिए अपनी बड़ी से बड़ी परेशानी में, बीमारी, दुख, संकट, असफलता के समय आप जरुर उपवास रखें। नीनवे की तरह, उपवास रखने से परमेश्वर, मृत्यु को अनन्त जीवन में बदल देता है। प्रभु की स्तुति हो।

मगर ध्यान देने वाली बात भी है कि नूह नबी के समय भी लोग पाप, बुराई से भर गए थे। पृथ्वी के सभी मनुष्यों ने अपना चाल–चलन बिगाड़ लिया था। बस, नूह नबी व उसका परिवार ही परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी था। (उत्पत्ति 6:9–12)

परमेश्वर ने नूह से कहा कि सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है। मैं सब मनुष्यों और सब कुछ जल प्रलय से नष्ट कर दूँगा। मगर तू एक किश्ती (जहाज) बना ले, जिससे तू और तेरा परिवार (आठ लोग) बच सकें व पृथ्वी के सब जानवर, पशु, पक्षी आदि सब के जोड़ा–जोड़ा शुद्ध–अशुद्ध गिनती अनुसार किश्ती में रख लेना। क्योंकि अब सात दिन और रात बीतने पर (किश्ती बनकर तैयार हो जाने के सात दिन बाद) मैं 40 दिन–रात पृथ्वी पर जल बरसाता रहूँगा और जितने प्राणी मैंने बनाए हैं, उन सब को भूमि से मिटा दूँगा। (उत्पत्ति 7:1–5)

जब नूह किश्ती तैयार कर रहा था, तब लोग उसका मजाक करते थे। नूह ने परमेश्वर की चेतावनी लोगों को दी, मगर किसी ने विश्वास नहीं किया और न ही पापों से पश्चाताप किया। आखिर जल प्रलय आई और सब कुछ नष्ट हो गया। बस नूह के परिवार के आठ लोग बचे। लेकिन दूसरी तरफ नीनवे नगर बच गया।

बाइबल में एस्तेर की पुस्तक में हम एस्तेर रानी की सच्ची कहानी पढ़ते हैं। यहाँ बहुत ही अद्‌भुत बात देखने में मिलती है। जब एस्तेर रानी व उसके लोगों (परमेश्वर के लोगों) ने उपवास रखा, तब परमेश्वर ने अपने लाखों लोगों को, उनके पशुओं को, उनके घरों, उनकी जमीनों आदि सब को नष्ट होने से, मृत्यु से बचा लिया।

यह क्षयर्ष राजा के दिनों की बात है जो हिन्दुस्तान से लेकर कूश तक, एक सौ सताईस प्रान्तों पर राज्य करता था। परमेश्वर के अनुग्रह से एक बहुत ही गरीब यहूदी लड़की एस्तेर को पटरानी बना दिया गया था। यहूदी मोर्दकै नामक व्यक्ति ने एस्तेर को अपनी बेटी करके पाला था। क्योंकि एस्तेर के माता–पिता मर गए थे। एस्तेर मोर्दकै की चचेरी बहिन लगती थी। (एस्तेर 2:7)

दूसरी तरफ, राजा क्षयर्ष ने हामान नामक व्यक्ति को (जो यहूदी नहीं था) दूसरे हाकिमों के सिहांसनों से ऊंचा सिहांसन और उच्च पद दिया। (एस्तेर 3:1)



परमेश्वर के लोगो, यह पूरी सच्ची कहानी आप एस्तेर की पुस्तक में पढ़ सकते हो। बस मैं आपको उपवास के विषय ही बताना चाहता हूँ। हामान उच्च मंत्री, परमेश्वर के लोगों का (यहूदियों का) बैरी था। हामान मंत्री ने राजा के लेखक को बुलाकर एक आज्ञा पत्र लिखवाया और उस पर राजा की अंगूठी की मोहर लगा दी। हामान ने राज्य के सब प्रान्तों में इस आशय की चिट्ठियां हरकारों के द्वारा भेजी कि एक ही दिन में, अर्थात आदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, क्या जवान, क्या बूढ़ा, क्या स्त्री, क्या बालक, सब यहूदी (परमेश्वर के लोग) मार डाले जाएं, नष्ट किए जाएं और उनका सत्यानाश किया जाए। और उनकी धन–सम्पत्ति लूट ली जाए। (एस्तेर 3:13) हामान मंत्री के इस कार्य के विषय राजा को कुछ मालूम नहीं था।

जब यह आज्ञा यहूदियों तक पहुंची, तब यहूदी बड़ा विलाप करने, उपवास करने और रोने पीटने लगे। (एस्तेर 4:3) मगर दूसरी तरफ परमेश्वर के लोगों के दुश्मन बहुत ही खुश हुए। दुश्मन लोग बेसबरी से उस दिन का इन्तजार करने लगे। दुश्मन योजनाएं बनाने लगे कि इस यहुदी परिवार को मैं मौत के घाट उतारुंगा, और उसका घर, मकान, पशु, धन–सम्पति मैं लुटूंगा। उसकी जवान औरतों को अपनी रखेल बना लूंगा।

दूसरा दुश्मन कहता कि वो बड़े परिवार को मैं लूट लूगां और सब को जान से मार दूंगा। एक छोटा सा बच्चा भी जिंदा नहीं छोडूंगा। उनकी खेती पर मैं कब्जा कर लूंगा।

सब दुश्मन अपने–अपने हथियारों की धार तेज करने लगे। सब ने परमेश्वर के लोगों को लूटने व नष्ट करने की पूरी योजना बना ली थी। उनको रात को नींद नहीं आ रही थी। वे बस एक ही बात सोच रहे थे। उस घर को मैं लुटूँगा, आदि आदि। जानबूझ कर यहूदी लोगों को चिढ़ाते थे कि अब तुम्हारे थोड़े दिन रह गए। दुश्मन बहुत परेशान करने लग गये। खुशियां मनाते, ढोल बजाते नाचते हुए घूम रहे थे।

मगर दूसरी तरफ परमेश्वर के लोगों को भी नींद नही आ रही थी,

खाना नही खाते थे, नहाते नही थे, बस एक ही काम करते थे और वह काम यह था ..... अपने परिवार के गले मिलकर रोते रहना।

जब इस आज्ञा के विषय मोर्दकै को व एस्तेर रानी को पता चला, तब दोनो बहुत दुखी हुए। आखिर रानी एस्तेर ने मोर्दकै के पास सब यहूदियों को संदेश भेजा कि ..... तीन दिन–रात न तो कुछ खाओ और न कुछ पीओ। मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति उपवास करुंगी। (एस्तेर 4:16)

यह पूरी घटना आप एस्तेर की पुस्तक में पढ़ सकते हो। मैं उपवास पर ही बात करना चाहता हूँ। जब एस्तेर रानी व अन्य सभी यहूदियों ने तीन दिन रात उपवास किया, न कुछ खाया न कुछ पीआ। परमेश्वर से प्रार्थना कर सहायता मांगी, तब परमेश्वर ने सब कुछ बदल दिया।

परमेश्वर के लोगों के दुश्मन मंत्री हामान को उसी खम्भे पर लटका कर फांसी दे दी गई, जिस खम्भें पर हामान, मोर्दकै को लटकाना चाहता था। (एस्तेर7:10) राजा ने, हामान मंत्री के सारे घर, धन–सम्पत्ति आदि को मोर्दकै को दे दिया और हामान मंत्री के स्थान पर, मोर्दकै को मंत्री बना दिया गया। परमेश्वर के लोगों ने अपने उन दुश्मनों को तलवार से मारकर नष्ट कर डाला। (एस्तेर 9:5)

परमेश्वर के प्रिय लोगो, आपने उपवास के महत्त्व को देखा। जब उन्होंने तीन दिन व रात, न कुछ खाया न कुछ पीआ। लगातार तीन दिन उपवास रखा, तब उन लोगों को परमेश्वर ने मृत्यु के मुँह से बचा लिया। नहीं तो यहूदी नष्ट हो जाते, मगर उपवास रखने के बाद सब कुछ बदल गया। परमेश्वर के लोगों के दुश्मन नष्ट किए गए। हो सकता है आपके दुश्मन अलग प्रकार के हों। आपका दुश्मन बीमारी, दुष्ट आत्मा, निराशा, असफलता, विफलता, गरीबी, कर्ज का बोझ, पीढ़ी दर पीढ़ी पड़ने वाले श्राप, दुःख, संकट, परेशानी, तंगी, मुसीबत, चिन्ता, बेरोजगारी, कार्य में बाधा, विवाह में बाधा, संतान होने में बाधा, घर मकान बनने में बाधा, दुश्मनों द्वारा हमले, दुश्मनों द्वारा अदालती केस, नशे की गंभीर आदत आदि हो सकते हैं। बस आप एस्तेर की तरह उपवास करें। सृष्टिकर्ता, सर्वशक्तिमान, महान



परमेश्वर आपको सफलता देना चाहते हैं। निश्चय परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह आपको आशीष देंगे।

''उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो। पुरनियों को, वरन् देश के सब रहने वालो को भी अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में इकट्ठा करके उसकी दोहाई दो''। (योएल 1:14)

''उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो, लोगों को इकट्ठा करो। सभा को पवित्र करो, पुरनियों को बुला लो, बच्चों और दूध पीउवों को भी इकट्ठा करो। दुल्हा अपनी कोठरी से, और दुल्हिन भी अपने कमरे से निकल आएँ'' (योएल 2:15–16)

# आखिर तक विश्वास योग्य बने रहें

**परमेश्वर के साथ, कलीसिया (चर्च) के साथ व (पास्टर) परमेश्वर के दास के साथ बने रहें**

## आशीष, छुटकारा आने में अगर देरी हो, तो ऊंघने न लगें

## बहुत बार परमेश्वर आखरी क्षण पर कार्य करते हैं

प्रभु यीशु मसीह हमें ''बने रहने'' के विषय सिखाते हैं। (यूहन्ना 15:1–11) सृष्टि का सिद्धांत भी यही है। जब कोई डाली पेड़ से अलग हो जाती है, तब वह सूख जाती है। मगर, अगर डाली पेड़ से बनी रहती है, तो फल देती है। आप यह बात अच्छे से जानते ही हैं।

अब मेरा प्रश्न यह है कि कब तक डाली पेड़ के साथ बनी रहे? और इसका एक ही उत्तर है, आखिर तक, अंतिम समय तक।

परमेश्वर के प्रिय लोगो, बहुत से ऐसे लोग हैं जो खुशी, आनन्द के समय तो परमेश्वर के साथ बने रहते हैं, मगर उन पर कोई सताव, दुख, संकट, पीड़ा, भयंकर बीमारी, विपत्ति, परेशानी, मुश्किल आ जाती है, तब वह परमेश्वर में बने नहीं रहते। कुछ लोग, जो ज्यादा मजबूत होते हैं, वे लम्बे समय तक बने रहते हैं, मगर आखिर तक बने नही रहते।

प्रभु जी के प्रिय लोगो, प्रभु परमेश्वर बहुत बार, संकट में आखरी क्षण (पल) पर अपनी सामर्थ्य प्रगट कर, आपको दुख– संकट से छुड़ाते हैं। परमेश्वर का कार्य करने का अपना तरीका होता है। परमेश्वर की सोच और हमारी सोच–समझ में जमींन आसमान का अन्तर है। हम चाहते होते हैं कि परमेश्वर हमारे तरीके से हमें मुश्किल से बाहर निकाले। जितनी हमारी समझ होती है, हम उसी का इस्तेमाल करते हैं, मगर परमेश्वर सही समय पर, सही तरीके से हमे संकट से बाहर निकालना चाहते होते हैं। इस तरह देर होती है, तो हम ''बने'' नहीं रहते।



''जब.... (आशीष/ छुटकारा) आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने (निराश/ परेशान/ चिन्ता/ बुड़बुड़ाना/ अल्पविश्वास करने) लगीं और सो (''बनी'' न रहीं) गई। (मती25:5) यहाँ हम पढ़ते हैं कि जो लगातार, अंतिम समय तक, आखिरी क्षण तक ''बनी'' न रहीं, उनके लिए ''द्वार बन्द'' हो गया। (मती25:10)

जो लोग अंतिम समय तक बने नहीं रहते उनके लिए आशीष/ छुटकारे का द्वार बन्द हो जाता है।

दानिय्येल 3 अध्याय में हम एक सच्ची घटना के विषय पढ़ते हैं। नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई और उसे मैदान में खड़ा कराया। राजा ने आज्ञा दी कि सब लोग उस मूरत को दण्डवत करें। जो कोई गिरकर दण्डवत न करेगा वह उसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाला जाएगा।

जब यह समाचार परमेश्वर के 3 लोगों शद्रक, मेशक और अबेदनगो के पास पहुँचा, तब उनके सामने बहुत बड़ी मुश्किल आ गई वे तीनों यहूदी थे और बेबीलोन के राजा ने यरुशलेम पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया था। यह तीनों बंदी बनाकर बेबीलोन लाए गए थे। मगर इस समय यह तीनों बेबीलोन के प्रांत के कार्य के ऊपर अधिकारी नियुक्त किये हुए थे। दानिय्येल भी इनके साथ बन्दी बना कर लाया गया था। मगर परमेश्वर के अनुग्रह से दानिय्येल द्वारा, राजा को स्वप्न का अर्थ बताने के कारण ही राजा ने उसे अपने दरबार में रखा हुआ था। और दानिय्येल के कहने पर इन तीनों शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को राजा ने अधिकारी बनाया था।

सब कुछ कुशल से चल रहा था कि अचानक वे मुश्किल में फंस गए। बाकी लोगों ने राजा की मूर्त को दण्डवत की, मगर इन तीनों ने मना कर दिया। व तीनों प्रार्थना करने लगे, ''हे प्रभु परमेश्वर हमें इस मुश्किल/ संकट/ परेशानी से छुटकारा दो। ''मगर परमेश्वर चुप रहे। उनके लिए ''छुटकारा'' तो नहीं आया, बल्कि उनके विरुद्ध राजा की आज्ञा आ गई। जब राजा को यह बात पता चली, राजा ने रोष और जलजलाहट में आकर

आज्ञा दी कि इन तीनों को पकड़ कर मेरे सामने हाजिर करो (दानि 3:13)

जब इस आज्ञा की खबर उन तीनों तक पहुंची, वे प्रार्थना करने लगे, ''हे प्रभु परमेश्वर हमें इस मुश्किल/ संकट/ परेशानी से छुटकारा दो।'' परमेश्वर चुप रहे। उनके लिए कोई छुटकारा तो नहीं आया मगर उन्हें पकड़ने के लिए सैनिक जरुर आ गए।

जब इन तीनों को पकड़ कर राजा के सामने पेश किया, तब भी यह तीनों प्रार्थना कर रहे थे, ''हे प्रभु परमेश्वर हमें इस मुश्किल/ संकट/ परेशानी से छुटकारा दो।'' परमेश्वर चुप रहे। उनके लिए कोई छुटकारा तो नहीं आया, मगर राजा की कठोर आज्ञा जरुर आई। राजा ने आज्ञा दी कि आग के भट्ठे को सात गुणा अधिक तपा दिया जाए और इन तीनों को एक साथ बांधकर आग में फेंक दिया जाए।

राजा की आज्ञा पाकर कुछ ताकतवर–बलवान सैनिकों ने उन तीनों को वस्त्रों सहित बांध दिया और आग के भट्ठे की ओर ले जाने लगे। तब उन तीनों ने फिर प्रार्थना की, ''हे प्रभु परमेश्वर हमें इस मुश्किल/ संकट/ परेशानी से छुटकारा दो।'' परमेश्वर चुप रहे। उनके लिए कोई छुटकारा तो नहीं आया, मगर भट्ठे की आग नजदीक जरुर आ गई।

जब बलवान सैनिक उन को उठा कर आग में फेंकने वाले ही थे, तब भी शद्रक, मेशक, अबेदनगो परमेश्वर से छुटकारे की प्रार्थना कर रहे थे, मगर कोई छुटकारा नहीं आया। परमेश्वर चुप रहे। मैं सोचता हूँ कि बलवान सैनिक ने जब तीनों को उठा लिया होगा, तब सैनिकों ने अपनी ताकत एक कर उन्हें फेंकने के लिए एक–दो–तीन बोला होगा। हमें भी जब भारी वजन की वस्तु को उठाना या फेंकना होता है, तो उन वस्तु को उठाने वाले सभी लोग अपनी ताकत को एक करने के लिए, एक–दो–तीन बोलते हैं। जैसे ही हम तीन बोलते हैं, उस वस्तु को उठाया या फेंका जाता है। जब सैनिकों ने ''एक ''बोला तब इन तीनों ने ''छुटकारे'' के लिए प्रार्थना की होगी कि हे प्रभु अब तो ''एक''बोल दिया गया है, मगर परमेश्वर चुप रहे। फिर सैनिक ने कहा ''दो''। यह तीनों प्रभु से कहने लगे होंगे कि प्रभु जी, हमें छुटकारा दो।



अब तो ''दो'' भी बोल दिया गया है। हे प्रभु जी अब बस ''तीन'' बोलना बाकी है, और इसके बाद हमें आग में फेंक दिया जाएगा। परमेश्वर फिर भी चुप रहे।

जैसे ही ''तीन'' बोलकर, तीनों को आग में फेंका गया। उनके आग में गिरने के एक सैकण्ड पहले, आखिरी क्षण में, परमेश्वर ने अपनी योजना प्रगट कर दी। प्रभु यीशु मसीह खुद आग के अन्दर आ गए। इन तीनों पर आग का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि जिन बलवान पुरुषों ने फेंका था। उन पर आग का प्रभाव जरुर पड़ा। राजा और मंत्री सब अचम्भित और घबरा कर उठ खड़े हुए। तीनों लोग आग में खुले हुए टहल रहे थे और चौथा प्रभु परमेश्वर उनके साथ टहल रहा था।

राजा के कहने पर वे तीनों आग से बाहर आए। राजा ने यहोवा परमेश्वर व शद्रक, मेशक, अबेदनगो की तारीफ की। राजा ने इन तीनों का पद और ऊँचा किया। (दानि 3:30)

परमेश्वर के लोगो, आप सोच सकते हैं कि अगर यह तीनों अंतिम समय तक विश्वास योग्य नहीं रहते तो इनका क्या हाल होता। अगर मुश्किल, परेशानी, दुख, पीड़ा, सताव में हम परमेश्वर में ''बने'' रहें, तो प्रभु जी निश्चय हमारे लिए छुटकारा भेजेंगे। अगर यह तीनों निराश होकर, अल्पविश्वास करके प्रभु जी से अलग होते तो कभी भी ऊँचे पद पर नहीं पहुँच सकते थे। प्रभु जी से अलग होकर ''सूख'' जाते।

हमें परमेश्वर के साथ तो ''बने'' रहना ही है, बल्कि चर्च (कलीसिया) व पास्टर (प्रभु के दास) के साथ भी बने रहना है। कुछ लोग परमेश्वर के साथ तो बने रहते हैं, मगर चर्च व पास्टर के साथ नहीं। कुछ लोग चर्च में जाते ही नहीं, कहते हैं कि हम घर में ही प्रार्थना कर लेते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि हमें प्रभु जी के दास के साथ बने रहने की जरुरत क्या है?

परमेश्वर के लोगो, अगर आप परमेश्वर के साथ, चर्च के साथ व पास्टर के साथ ''बने'' नहीं रहेंगे तो आप फलवंत नही हो पांएगे। एक ईट

को अकेला छोड़ दो सब लोग ईंट को पाँव मारेंगे। इधर उधर फेंकेंगे। लेकिन अगर वो ईंट दीवार में बनी रहे तो कोई परेशान नहीं करेगा, क्योकि उस ईंट के ऊपर–नीचे सब ओर ईंट होंगी। इस प्रकार अगर आप चर्च में बने रहेंगे तो शैतान आप को ठोकर नहीं मारेगा। आपकी प्रार्थना सहायता के लिए आपके चारों ओर चर्च के विश्वासी होंगे।

परमेश्वर के लोगो, आपको ''बने'' रहना है, मगर क्या बने रहना है? मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आपको बेटा, चेला, मित्र बने रहना है।

**तीन प्रकार की आशीष, तीन स्त्रोत, तीन कदम उठाना .....**

परमेश्वर के लोगो, मैं आपको तीन प्रकार की आशीषों के बारे में बताना चाहता हूँ। पहली आत्मिक आशीष, दूसरी शारीरिक आशीष, तीसरी सांसारिक आशीष।

1 **आत्मिक आशीष** ✝ पापों की क्षमा, उद्धार/ मुक्ति/ मोक्ष/ शांति, अनन्त जीवन, पवित्र आत्मा व पवित्र आत्मा के वरदान

**2 शारीरिक आशीष** ✝ दुष्टआत्मा से छुटकारा, जादू–तबीज की शक्ति से छुटकारा, बीमारियों से चंगाई

3 **सांसारिक आशीष** ✝ प्रत्येक बात में सफलता, धन, सम्पत्ति पर आशीष, परिवार पर आशीष, पशुओं व खेती पर आशीष आदि

**तीन स्त्रोत** ✝ परमेश्वर, चर्च (कलीसिया) व पास्टर

**तीन कदम** ✝ बेटा बनना, चेले बनना व मित्र बनना

परमेश्वर के लोगो, आप को पहला कदम उठा कर परमेश्वर के बेटे बनना है। जब बेटे बनेंगे तब ही आप वारिस बन सकेंगे। यूहन्ना 1:12–13 में लिखा है कि जितनों ने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया। अर्थात उन्हें जो उनके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहु से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा



से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

''इसलिए अब तू दास नहीं, परन्तु पुत्र है। और जब पुत्र हुआ तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।'' (गलातियों 4:7)

''आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। और यदि संतान हैं तो वारिस भी हैं।'' (रोमियों 8:16–17)

मगर आपको केवल पहला कदम उठाकर बेटा बनना ही काफी नहीं बल्कि दूसरा कदम उठाकर ''चेले'' बनना है। बेटा बनने के लिए आपको विश्वास करना होता है, मगर चेले बनने के लिए आपको आज्ञा का पालन करना होता है। किसी व्यक्ति के घर अगर बेटा पैदा हो जाए, वह वारिस तो बन गया। मगर वह बेटा आज्ञाकारी न हो तो उसका क्या लाभ? कई बार तो बेटे को बे–दखल भी कर दिया जाता है। अगर बेटा, अपने पिता का चेला बन जाए तो कितना अच्छा हो। प्रत्येक बात में आज्ञाकारी हो तो कितना अधिक अच्छा होगा। इस प्रकार आपको मात्र बेटा ही नहीं बनना बल्कि चेला भी बनना है।

अब आपको तीसरा कदम उठाना है, और वो है मित्र बनना। परमेश्वर की संतान बनना, चेले बनना ही काफी नही, बल्कि आपको परमेश्वर के मित्र बनना है। मित्र बनने के लिए आपको परमेश्वर से प्रेम करना है। (यूहन्ना 15:12–15) प्रभु यीशु मसीह आपको मित्र बनाना चाहते हैं। प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलो को मित्र कहा। ––––––'' अब्राहम परमेश्वर का मित्र कहलाया।'' (याकूब 2:23)

परमेश्वर के लोगो, संसार में अगर किसी व्यक्ति का बेटा है, और बेटा अपने पिता का चेला भी है और पिता का मित्र भी है, तो वे धन्य होंगे। एक बेटा अपने पिता का दुख देख सकता है, मगर चेला बेटा अपने पिता का दुख नहीं देख सकता। और मित्र चेला बेटा हो तो बिल्कुल भी अपने पिता का दुख नहीं देख सकता। वे दोनों एक मन होंगे। पिता प्रत्येक आशीष और अपना सम्पूर्ण प्रेम अपने मित्र चेले बेटे को देगा।

एक बहू, अपनी सास का दुख देख सकती है, मगर चेली बहू–मित्र बहू कभी भी अपनी सास का दुख नहीं देख सकती। बहू अगर केवल बहू बनी रहती है तो वो ऊपर–ऊपर से तो अपनी सास की सेवा करेगी, मगर मन से उसकी सेवा, आदर नहीं करेगी।

प्रिय परमेश्वर के प्रिय लोगो, अब आपने अगर तीन कदम उठा लिए हैं कि तीन प्रकार की आशीष पाऐं, तो आपको तीन स्त्रोत के लिए यह तीनों कदम उठाने हैं।

आपने पहले स्त्रोत परमेश्वर के लिए तीनों कदम उठा लिए हैं। अब आपको जरुरत है कि आप दूसरे स्त्रोत चर्च (कलीसिया) के लिए भी यह तीनों कदम उठाएं। आपको अपनी चर्च के बेटे, चेले व मित्र बनना है। बहुत बार हम परमेश्वर के साथ तो बने रहते हैं। मगर चर्च के साथ नहीं। आप अपनी चर्च पर विश्वास रखें, चर्च की आज्ञाकारी करें व चर्च से प्रेम करें। तब ही आप चर्च के बेटे, चेले व मित्र बन सकते हैं।

बहुत बार आप यह दोनों स्त्रोत के लिए तो तीनों कदम उठा लेते हैं मगर तीसरे स्त्रोत ''पास्टर''(परमेश्वर के दास) के लिए यह तीनों कदम नहीं उठाते। आप परमेश्वर पर तो विश्वास करते हैं, व परमेश्वर की संतान भी बन जाते हैं, मगर पास्टर पर विश्वास नहीं करते व ना ही पास्टर की संतान बनते हैं। आप परमेश्वर की तो आज्ञाकारी करते हैं, व परमेश्वर के चेले बन जाते हैं। मगर पास्टर की आज्ञाकारी नहीं करते व पास्टर के चेले (आज्ञाकारी) नहीं बनते। आप परमेश्वर से प्रेम करके, परमेश्वर के मित्र तो बन जाते हो, मगर पास्टर से प्रेम करके, पास्टर के मित्र नहीं बनते। बहुत बार पास्टर के खिलाफ बातें करते हैं। आदर सम्मान नहीं करते। प्रभु यीशु मसीह ने कहा है कि जहां आदर सम्मान नहीं होता। वहां आशीष नहीं होती।

परमेश्वर के मित्रो, आप बने रहें। निश्चय परमेश्वर आपको तीनों प्रकार की आशीष देंगे। आपको प्रत्येक संकट से बाहर निकालेंगे व आपको फलवंत करेंगे।



# अपनी सारी चिन्ता प्रभु पर डाल दें

**जहां विश्वास होता है, वहां चिन्ता नहीं होती,**

**जहां चिन्ता होती है, वहां विश्वास नहीं होता।**

''अपने मार्ग (बिजनेस/ कार्य/ काम–धन्धा/ खाने–पीने/ रहने के लिए घर, पढ़ाई, चंगाई, छुटकारा, संतान की प्राप्ति, खेती पर आशीष, पशु का फलवंत होना, विवाह) की चिन्ता यहोवा पर छोड़ और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।'' (भजन संहिता 37:5)

''अपनी सारी चिन्ता (दुश्मनों के हमलों की, अदालती केस की, पारिवारिक समस्या की, कर्ज की, प्रत्येक संकट, बाधा, परेशानी, बीमारी की) उसी (प्रभु यीशु मसीह) पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।'' (1पतरस5:7)

पवित्र बाइबल के इन वचनों से साफ पता चलता है कि हमें चिंता नहीं करनी है। हमें सम्पूर्ण भरोसा प्रभु यीशु मसीह पर रखना है। बहुत बार हम अपनी चिन्ता को प्रभु यीशु मसीह के चरणों में लेकर जाते हैं। प्रार्थना भी करते हैं। अपनी समस्या, परेशानी, चिन्ता के विषय प्रभु जी से बात भी करते हैं। मगर जब हम प्रभु जी के चरणों में प्रार्थना समाप्त कर खड़े होते हैं, अपनी चिन्ता को भी साथ ही उठा कर घर ले जाते हैं।

हम अपनी सारी चिन्ता परमेश्वर पर डालते नहीं। बल्कि पूरा दिन–रात अपने सिर पर उठाए हुए चिन्ता..... चिन्ता..... चिन्ता..... चिन्ता..... चिन्ता..... चिल्लाते रहते हैं।

एक बार एक बूढ़ी औरत अपने सिर पर भारी सामान की पोटली (गठड़ी) उठाए हुए रास्ते में अपने घर की ओर जा रही थी। पीछे से एक व्यक्ति जीप लेकर आ रहा था। उस ड्राईवर को उस औरत पर तरस आया कि बेचारी कितना भारी वजन उठा रही है। उस ने उस औरत को अपनी जीप

में पिछली सीट पर बैठा लिया। थोडी देर बाद जब ड्राइर्वर ने पीछे मुड़कर देखा तो हैरान रह गया। वह औरत जीप मैं बैठी हुई तो थी, मगर अपनी भारी सामान की गठड़ी अभी भी अपने सिर पर उठा कर बैठी थी।

हम भी ऐसा ही करते हैं। प्रभु यीशु मसीह कहते हैं कि अपनी चिन्ता, बोझ मुझ पर डाल दो। मगर हम प्रभु जी के पास आकर भी भारी बोझ अपने मन में, अपने सिर पर उठाए रहते हैं।

परमेश्वर के लोगो, मत्ती6:31–32 में लिखा है, ''इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाएँगें, या क्या पीएँगें या क्या पहनेंगे। ..... तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है।''

क्या परमेश्वर सिर्फ हमारे खाने, पीने, पहनने ही की चिन्ता करते हैं? जी नहीं, परमेश्वर सब कुछ की चिन्ता करता है। आपके प्रत्येक दुख, पीड़ा, संकट, विरोधी की मुकद्दमेबाजी आदि प्रत्येक बात की चिन्ता करता है। हमारा परमेश्वर, हमारे दुश्मन से यह नहीं कहता कि तुम मेरे लोगों को क्यों सताता है। बल्कि यह कहता है कि तू मुझे क्यों सताता है। (प्रेरित9:4–5) परमेश्वर कहता है, ''मत डर, (चिन्ता न कर) क्योंकि मैं तेरे संग हूँ । इधर उधर मत ताक (सहायता पाने के लिए, चिन्ता– मुश्किल– संकट में मदद पाने के लिए), क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ। मैं तुझे दृढ़ करुंगा और तेरी सहायता करुंगा (संकट से बाहर निकालूंगा), अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा।'' (यशा 41:10)

परमेश्वर जी कहते हैं, ''जितने हथियार तेरी हानि के लिए बनाएं जाएं, उन में से कोई सफल न होगा, और जितने लोग (तुम पर अदालत में मुकद्दमा) करें, उन सभों से तू जीत जाएगा।'' (यशा54:17)

परमेश्वर के लोगो, आप जब चिन्ता करते हैं, उस समय आप परमेश्वर पर अविश्वास प्रगट करते हैं। चिन्ता और विश्वास एक साथ रह ही नहीं सकते। जब चिन्ता होगी, उस समय विश्वास नहीं होगा। जब विश्वास होगा उस समय चिन्ता नहीं होगी।